LIST OF MEMBERS WHO PREPARED QUESTION BANK FOR ECONOMICS FOR CLASS XII

TEAM MEMBERS

Sl. No.	Name	Designation
1.	**Mrs. Neelam Vinayak (Team Leader)**	V. Principal G.G.S.S. Diputy Gants Sadar Bazar, Delhi-110006
2.	**Sh. S.P.S. Rathi**	P.G.T. (Economics) Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya BT Block, Shalimar Bagh, Delhi-88
3.	**Sh. Sanjeev Kumar**	P.G.T. (Economics) G.B.S.S.S. No. 2 Ghonda, Delhi-110053

QUESTION BANK

ECONOMICS (Hindi Medium)

DESIGN OF SAMPLE QUESTION PAPER FOR MARCH, 2012 EXAMINATION

Time : 3 hours | Maximum Marks : 100

The weightage to marks over different dimensions of the question paper shall be as under.

A. Weightage to Current/Subject units

S.No.	Content Unit	Mark
Part A :	**Introductory Micro Economics**	
1.	Introduction	4
2.	Consumer Behaviour and Demand	18
3.	Producer Behaviour and Supply	18
4.	Forms of Market and Price Determination	10
5.	Simple applications of Tools of demand and supply curves	
	Total	**50**
Part B :	Introductory Macro Economics	
1.	National Income and Related Aggregates	15
2.	Determination of Income and Employment	12
3.	Money and Banking	8
4.	Government Budget and the Economy	8
5.	Balance of payments	7
	Total	**50**
	Grand Total	**100**

WEIGHTAGE TO FORMS OF QUESTIONS

S. No.	Forms of Questions	Marks for each question	No. question	Total Mark
1.	Very short answer type (VSA)	1	10	10
2.	Short answer type (SAI)	3	10	30
3.	Short answer type (SAH)	4	6	24
4.	Long answer type (LA)	6	6	36
	Total		**32**	**100**

C. No. of Sections

The question paper will have two Sections A and B.

0. Scheme of Option

There will be no overall choice. However, there is internal choice in one question of 3 marks and one question of 4 marks and one question of 6 marks in each section.

E. Weightage to Forms of Questions

S. No.	Estimated Difficulty Level of Questions	Percentage
1.	Easy	30%
2.	Average	50%
3.	Difficult	20%

F. Typology of Questions

In order to asses different abilities related to the subject, the question paper is likely to include open-ended questions and numerical questions.

विषय सूची

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	परिचय	5
2.	उपभोक्ता व्यवहार तथा मांग	11
3.	उत्पादक का व्यवहार और पूर्ति	23
4.	बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण	40
5.	मांग व पूर्ति वक्रों के उपकरणों का सरल अनुप्रयोग	48
6.	राष्ट्रीय आय एवं संबद्ध समाहार	50
7.	मुद्रा और बैकिंग	72
8.	आय और रोजगार का निर्धारण	79
9.	सरकारी बजट तथा अर्थव्यवस्था	92
10.	भुगतान शेष	100
Question Papers		108

यूनिट 1

परिचय

याद रखने योग्य बातें :

- अर्थशास्त्र के अध्ययन को दो शाखाओं में बांटा गया है :

  (अ) व्यष्टि अर्थशास्त्र

  (ब) समष्टि अर्थशास्त्र

- व्यष्टि अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है।
- समाष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत संपूर्ण अर्थव्यवस्था तथा उसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है।
- अर्थव्यवस्था वह आर्थिक संगठन है जो जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध कराता है।
- अर्थव्यवस्था में उपलब्धा सीमित संसाधनों के आबंटन की समस्या को आर्थिक समस्या कहते हैं।
- आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के मुख्य कारण है:

आवश्यकताओं का असीमित होना	साधनों का दुर्लभ होना।	साधनों के वैकल्पिक प्रयोग होना

- एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं :
- एक अवसर का चयन करने पर दूसरे सर्वश्रेष्ठ अवसर का किया गया त्याग अवसर लागत कहलाता है। इसे सर्वश्रेष्ठ विकल्प की लागत भी कहा जाता है।

- उत्पादन संभावना वक्र (PPC) : एक अर्थव्यवस्था में दिए हुए संसाधनों तथा उत्पादन तकनीक के अतर्गत दो वस्तुओं की विभिन्न उत्पादन संभावनाओं को दर्शाता है।
- उत्पादन सभावना वक्र

  (*a*) नीचे की ओर ढालू होता है।

  (*b*) मूल बिन्दु की ओर नतोदर होता है।
- PPF में दायीं ओर खिसकाव संसाधनों में वृद्धि तथा तकनीकी प्रगति को दर्शाता है।
- सीमांत विस्थापन दर एक वस्तु की त्यागी जाने वाली इकाइयों तथा अन्य वस्तु की बढ़ाई गई एक अतिरिक्त इकाई का अनुपात है।
- सीमांत विस्थापन दर को सीमांत अवसर लागत भी कहते हैं क्योंकि वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की त्यागी गई इकाइयां ही अतिरिक्त लागत होती है।

एक अंक वाले अति लघु उत्तर वाले प्रश्न

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र को उदाहरण की सहायता से परिभाषित कीजिए।
2. समष्टि अर्थशास्त्र को उदाहरण की सहायता से परिभाषित कीजिए।
3. सीमांत अवसर लागत की परिभाषा लिखिए।
4. आर्थिक समस्या उत्पन्न होने का मुख्य कारण क्या है?
5. संसाधनों की दो विशेषताएं लिखिए।
6. दुलर्भता से क्या अभिप्राय है?
7. सीमांत विस्थापन दर से क्या अभिप्राय है?
8. अर्थव्यवस्था से क्या अभिप्राय है?

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल – H.O.T.S.

9. चीनी उद्योग का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र का विषय है, कारण दीजिए।
10. संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोग से क्या तात्पर्य है?
11. सीमांत विस्थापन दर स्थिर रहने पर उत्पादन संभावना वक्र की आकृति कैसी होगी?
12. भारत में बेरोजगारी की समस्या को समष्टि अर्थशास्त्र का विषय माना जाता है या व्यष्टि अर्थशास्त्र का?

लघु उत्तर वाले प्रश्न (3/4 अंक)

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अंतर लिखिए। उदाहरण भी दीजिए।
2. आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है? 'कैसे उत्पादन किया जाए' समस्या की व्याख्या कीजिए।
3. 'क्या उत्पादन किया जाए' समस्या का वर्णन कीजिए, उदाहरण भी दीजिए।
4. 'किसके लिए' उत्पादन किया जाए की समस्या को उदाहरण को उदाहरण की सहायता से समझाइए।
5. अवसर लागत को उदाहरण की सहायता से परिभाषित कीजिए। यह सीमांत अवसर लागत से किस प्रकार भिन्न है?

H.O.T.S. – उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल

6. उत्पादन संभावना वक्र क्या है? एक काल्पनिक तालिका तथा चित्र की सहायता से इसकी व्याख्या कीजिए।
7. उत्पादन संभावना वक्र की सहायता से निम्न स्थितियों को दर्शाइए:

   (a) संसाधनों का पूर्ण उपयोग

   (b) संसाधनों का विकास

   (c) संसाधनों का अल्प प्रयोग
8. निम्नलिखित से सीमांत प्रतिस्थापन दर की गणना कीजिए। उत्पादन संभावना वक्र की आकृति कैसी होगी तथा क्यों?

संयोग	वस्तु '*A*' का उत्पादन (इ.)	वस्तु '*B*' का उत्पादन (इ.)
A	20	0
B	18	1
C	14	2
D	8	3
E	0	4

एक अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्या का अध्ययन करती है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता का व्यवहार, फर्म, उद्योग व बाजार आदि का अध्ययन करते हैं।
2. समष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत संपूर्ण अर्थव्यवस्था तथा इसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय आय, रोजगार का स्तर आदि।
3. सीमांत विस्थापन दर को सीमांत अवसर लागत भी कहते हैं क्योंकि वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु की त्यागी गई इकाइयां ही अतिरिक्त लागत होती हैं।
4. संसाधनों का सीमित होना तथा उनके वैकल्पिक उपयोग और आवश्यकताओं का असीमित होना।
5. संसाधन सीमित होते हैं तथा संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग हैं।
6. दुर्लभता से अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जिसमें एक साधन की मांग उसकी पूर्ति से अधिक होती है।
7. सीमांत विस्थापन दर एक वस्तु (Y) की त्यागी जाने वाली इकाइयों एवं दूसरी वस्तु (X) की बढ़ाई गई एक अतिरिक्त इकाई का अनुपात होता है।

   $$MRT=\frac{\Delta Y}{\Delta X}$$
8. अर्थव्यवस्था वह आर्थिक संगठन है जो निश्चित क्षेत्र में रहने वाले लोगों को जीविका के साधन उपलब्ध कराता है।
9. चीनी उद्योग का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र का विषय है क्योंकि यह उद्योग की एक इकाई का अध्ययन है।
10. संसाधनों के एक से अधिक उपयोगों में प्रयोग की संभावना संसाधनों का वैकल्पिक प्रयोग कहलाती है।
11. सीमांत विस्थापन दर स्थिर रहने पर उत्पादन संभावना वक्र की आकृति एक सीधी रेखा के रूप में होगी।
12. भारत में बेरोजगारी समष्टि, अर्थशास्त्र का विषय है क्योंकि इसका अध्ययन सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर किया जाता है।

यूनिट 2

उपभोक्ता व्यवहार तथा मांग

स्मरणीय बिंदु

- **उपभोक्ता :** वह आर्थिक एजेन्ट है जो अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करता है।
- **कुल उपयोगिता :** एक निश्चित समय में वस्तु की सभी इकाइयों का उपभोग करने पर प्राप्त संतुष्टि का कुल योग, कुल उपयोगिता कहलाता है।
- **सीमांत उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर कुल उपयोगिता में होने वाली शुद्ध वृद्धि को सीमांत उपयोगिता कहते हैं।
- **ह्रसमान सीमांत उपयोगिता नियम :** किसी वस्तु की इकाइयों का उत्तरोत्तर उपभोग करने पर प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती चली जाती है।
- **उपभोक्ता बंडल :** उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं के उन सभी बंडलों का संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत तथा अपनी सीमित क्रय शक्ति के आधार पर खरीद सकता है।
- **उपभोक्ता बजट :** उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय या क्रय शक्ति को बताता है जिसके द्वारा वह निश्चित कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।
- **बजट रेखा :** बजट रेखा दो वस्तुओं के उन सभी संयोगों को एक ही वक्र पर दर्शाती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय से खरीद सकता है।
- **एक दिष्ट अधिमान :** उपभोक्ता का अधिमान एकदिष्ट है यदि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है, जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम से कम एक वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरी वस्तु की मात्रा समान होती है।
- **बजट रेखा में परिवर्तन :**
  1. बजट रेखा में समांतर खिसकाव (दायें तथा बायें) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के कारण होता है।
- **उपभोक्ता संतुलन की शर्तें :** उपयोगिता विश्लेषण के अनुसार एक वस्तु की स्थिति में $MU_x = P_x$
- दो वस्तुओं की स्थिति में : $\frac{MU_x}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = MU_m$

अनधिमान वक्र विश्लेषण के अनुसार

(i) सीमांत प्रतिस्थापन दर घटती हुई हो

(ii) $MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y}$

(iii) बजट रेखा अनधिमान वक्र को स्पर्श करे।

- **मांग :** वस्तु की वह मात्रा जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित कीमत पर खरीदता है या खरीदने के लिए तैयार होता है।
- **बाजार मांग :** कीमत के एक निश्चित स्तर पर किसी बाजार में सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्राओं का योग बाजार मांग कहलाता है।

मांग के निर्धारक तत्व

- वस्तु की कीमत → मांगी गई मात्रा में परिवर्तन
  - मांग में विस्तार → वस्तु की कीमत में कमी → मांग वक्र पर बिन्दु का नीचे की ओर संचलन
  - मांग में संकुचन → वस्तु की कीमत में वृद्धि → मांग वक्र पर बिन्दु का ऊपर की ओर संचलन
- अन्य कारक
  - (क) उपभोक्ता का आय
  - (ख) संबंधित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन
  - (ग) उपभोक्ता की रुचि फैशन, मौसम आदि
  - (घ) जनसंख्या में परिवर्तन
  - (ङ) भविष्य में कीमत परिवर्तन की संभावना

  → मांग में परिवर्तन
  - मांग वक्र में दांयी ओर खिसकाव/मांग में वृद्धि
    1. आय में वृद्धि।
    2. उपभोक्ताओं की संख्या में वृद्धि।
    3. भविष्य में कीमत वृद्धि की संभावना।
    4. प्रतिस्थापन वस्तु कीमत में वृद्धि।
    5. पूरक वस्तु की कीमत में कमी।

    → उपर्युक्त कारणों से मांग वक्र का दाहिनी ओर खिसकाव
  - मांग में कमी/मांग वक्र में बायीं ओर खिसकाव
    1. आय में कमी।
    2. उपभोक्ताओं की संख्या में कमी।
    3. भविष्य में कीमत कम होने की संभावना।
    4. प्रतिस्थापन वस्तु कीमत में कमी।
    5. पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि।

    → उपर्युक्त कारणों से मांग वक्र का बांई ओर खिसकाव

- **मांग मात्रा में परिवर्तन :** वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन के कारण वस्तु की मांग में परिवर्तन।
- **मांग में परिवर्तन :** कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब वस्तु की मांग घट या बढ़ जाती है।
- **मांग फलन :** यह किसी वस्तु की मांग तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों के फलनात्मक संबंध को बताता है।
- **मांग की कीमत लोच :** मांग की कीमत लोच, कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप मांग की मात्रा में होने वाले प्रतिक्रियात्मक परिवर्तन को संख्यात्मक रूप में मापती है।

मांग की कीमत लोच को मापने की विधियां

कुल व्यय विधि | बिन्दु/ग्राफिक विधि | प्रतिशत/अनुपातिक विधि

कुल व्यय विधि : इस विधि के अनुसार कीमत में परिवर्तन से पूर्व व्यय तथा कीमत में परिवर्तन के बाद व्यय का अध्ययन करके मांग की लोच तय की जाती है।

बिन्दु या ग्राफिक विधि : मांग की लोच (दिये बिन्दु पर) $\dfrac{\text{बिन्दु से मांग वक्र का निचला भाग}}{\text{बिन्दु से मांग वक्र का ऊपरी भाग}}$

प्रतिशत या आनुपातिक विधि : $E_D = (-)\ \dfrac{Q}{P}\ \dfrac{P}{Q}$ अथवा $E_D = (-)\ \dfrac{Q_1 \quad Q_0}{P_1 \quad P_0}\ \dfrac{P_0}{Q_0}$

जहाँ पर $P = P_0$ = प्रारंभिक कीमत

$Q = Q_0$ = प्रारंभिक मात्रा

P_1 = अन्तिम कीमत

Q_1 = अन्तिम मात्रा

P = कीमत में परिवर्तन

Q = मांग में परिवर्तन

E_D = मांग की कीमत लोच

अथवा, $E_D\ \dfrac{\text{मांग में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

मांग की कीमत लोच की श्रेणियां

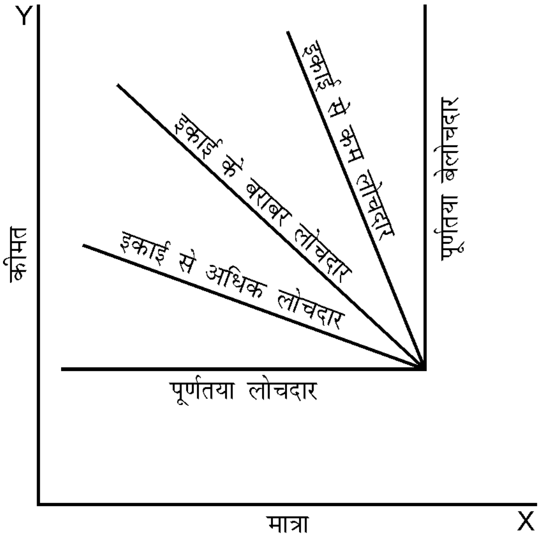

- मांग की कीमत लोच को प्रभावित करने वाले कारक
  (क) उपभोक्ता व्यवहार
  (ख) वस्तु की प्रकृति
  (ग) उपभोग के स्थगन की संभावना
  (घ) वस्तु पर व्यय किया जाने वाला आय का भाग
  (ङ) वस्तु के विविध प्रयोग
  (च) उपभोक्ता की आय
  (छ) निकटतम प्रतिस्थापनों की उपलब्धता

अति लघु उत्तर वाले प्रश्न (एक अंक)

1. उपयोगिता से क्या अभिप्राय है?
2. सीमान्त उपयोगिता से कुल उपयोगिता की गणना कैसे करते हैं?
3. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम क्या है?
4. सीमान्त उपयोगिता शून्य होने पर कुल उपयोगिता का व्यवहार कैसा होता है?
5. एक वस्तु के सन्दर्भ में उपभोक्ता सन्तुलन की शर्त लिखिए।
6. उपभोक्ता सन्तुलन से क्या अभिप्राय है?

7. उपभोक्ता बजट को परिभाषित कीजिए।

8. उपभोक्ता बंडल से क्या अभिप्राय है?

9. बजट सेट को परिभाषित कीजिए।

10. अनाधिमान वक्र को परिभाषित कीजिए।

11. बजट रेखा को परिभाषित कीजिए।

12. ऊंचा अनधिमान वक्र अधिक संतुष्टि क्यों प्रदान करता है?

13. घटती सीमान्त प्रतिस्थापन दर का अनधिमान वक्र के ढाल का क्या प्रभाव पड़ता है।

14. एक दिष्ट अधिमान से क्या अभिप्राय है?

15. सामान्य वस्तु को परिभाषित कीजिए।

16. किसी वस्तु की निकटतम प्रतिस्थानापन्न वस्तु उपलब्ध होने पर उसकी मांग की लोच किस प्रकार प्रभावित होती है?

17. उपभोक्ता की आय में वृद्धि होने पर 'X' वस्तु की मांग में कमी आ जाती है। वस्तु 'X' किस प्रकार की वस्तु है?

18. किसी वस्तु की प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत बढ़ने पर उस वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

19. वस्तु की कीमत में वृद्धि होने पर उस वस्तु पर होने वाले कुल व्यय में कमी हो जाती है। वस्तु की मांग लोचदार होगी या बेलोचदार।

20. बाजार मांग से क्या अभिप्राय है?

21. मांग अनुसूची को परिभाषित कीजिए।

22. मांग वक्र पर ऊपर की ओर संचलन किस कारण से होता है?

23. क्रेताओं की संख्या में कमी के फलस्वरूप मांग वक्र में किस ओर खिसकाव होगा?

24. सरल रेखीय मांग वक्र के मध्य बिन्दु पर मांग की लोच क्या होगी?

25. मांग वक्र का ढाल यदि X-अक्ष के समान्तर हो तो उस स्थिति में मांग की लोच क्या होगी?

26. पानी की मांग बेलोचदार क्यों होती है?

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल - H.O.T.S.

27. वस्तु की कीमत के घटने का कुल व्यय पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि वस्तु की मांग इकाई लोचदार है?
28. वस्तु की इकाइयों का प्रयोग लगातार करने से अधिकतम होने तक कुल उपयोगिता घटती दर पर क्यों बढ़ती है?
29. पेन की कीमत में कमी होने से स्याही की मांग क्यों बढ़ जाती है?
30. कुल उपयोगिता का व्यवहार कैसा होगा जब सीमान्त उपयोगिता वक्र X-अक्ष के नीचे स्थित होता है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. तालिका की सहायता से कुल उपयोगिता एवं सीमान्त उपयोगिता में संबंध बताइये?
2. एक वस्तु की स्थिति में उपयोगिता अवधारणा की सहायता से उपभोक्ता सन्तुलन की व्याख्या कीजिए।
3. बजट रेखा से क्या अभिप्राय है? इसमें परिवर्तन किन कारणों से होता है?
4. कुल उपयोगिता में क्या परिवर्तन होंगे जबकि–
   (क) सीमान्त उपयोगिता वक्र X-अक्ष के ऊपर स्थित हो।
   (ख) सीमान्त उपयोगिता वक्र X-अक्ष को स्पर्श कर रहा हो?
   (ग) सीमान्त उपयोगिता वक्र X-अक्ष के नीचे स्थित हो?
5. अनधिमान वक्र की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए?
6. दो अनधिमान वक्र दूसरे को स्पर्श क्यों नहीं करते?
7. बजट रेखा में समान्तर खिसकास किस स्थिति में होता है?
8. एक वस्तु X की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि संबंधित वस्तु की कीमत में वृद्धि हो जाय?
9. उपभोक्ता की आय बढ़ने पर सामान्य वस्तु की मांग क्यों बढ़ती है?
10. निम्न वस्तुओं की मांग की लोच को स्पष्ट कीजिए–
    (क) विलासिता की वस्तुएं
    (ख) वैकल्पिक प्रयोग की वस्तुएं
    (ग) अनिवार्य वस्तुएं

11. एक रेखा चित्र की सहायता से मांग के विस्तार और मांग की वृद्धि में अन्तर स्पष्ट करो?

12. एक सरल रेखीय मांग वक्र पर स्थित निम्न बिन्दुओं पर मांग की कीमत लोच मापिये?

(क) मांग वक्र के मध्य में स्थित बिन्दु पर।

(ख) मांग वक्र जहां Y-अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।

(ग) मांग वक्र जहां X-अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।

13. मांग में परिवर्तन तथा मांगी गई मात्रा में परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट करो।

14. मांग की लोच पर निम्न कारकों का क्या प्रभाव होता है?

(क) समय तत्व

(ख) वस्तु की प्रकृति

15. मांग वक्र का ढाल निम्न स्थितियों में कैसा होगा–

(क) पूर्णतया लोचदार मांग

(ख) पूर्णतया बेलोचदार मांग

(ग) इकाई के बराबर लोचदार मांग

16. मांग वक्र में दाई ओर खिसकाव (मांग में वृद्धि) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।

17. मांग में कमी (मांग वक्र में बांई ओर खिसकाव) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या करो।

18. वस्तु पर खर्च किया जाने वाला आय का भाग उसकी मांग की लोच पर क्या प्रभाव डालता है?

19. मांग की लोच क्या होगी यदि–

(क) कीमत में वृद्धि के कारण कुल व्यय में वृद्धि हो जाए।

(ख) कीमत में कमी होने के कारण कुल व्यय में वृद्धि हो जाए।

संख्यात्मक प्रश्न

20. X और Y वस्तुओं की मांग की कीमत लोच बराबर है। X वस्तु की कीमत 10 रु. प्रति इकाई से घटकर 8 रु. प्रति इकाई हो जाती है और इसकी मांग 16 प्रतिशत घट जाती है। Y की कीमत 10 प्रतिशत बढ़ती है। इसकी मांग में होने वाली प्रतिशत वृद्धि का परिकलन कीजिए।

21. वस्तु X और वस्तु Y की मांग की कीमत लोच समान है यदि वस्तु X की कीमत में 10 प्रतिशत की कमी और वस्तु Y की कीमत में 10 प्रतिशत की वृद्धि हो जाए तो X और Y की मात्राओं में क्या परिवर्तन होंगे?

22. एक उपभोक्ता किसी वस्तु की कीमत रु 4 प्रति इकाई होने पर 50 इकाइयां खरीदता है। इस वस्तु की मांग की कीमत लोच-2 है। रु. 5 प्रति इकाई कीमत होने पर उपभोक्ता इस वस्तु की कितनी इकाईयां खरीदेगा?

23. जब एक वस्तु की कीमत 2 रु. प्रति इकाई घटती है तो उसकी मांग-मात्रा 10 इकाई बढ़ जाती है। इसकी मांग की कीमत लोच (–) 1 है। परिवर्तन से पूर्व इसकी कीमत 10 रु. प्रति इकाई पर इसकी मांग-मात्रा का परिकलन कीजिए।

24. एक वस्तु की कीमत लोच - 0.5 है। रु. 20 प्रति इकाई कीमत पर इस पर कुल व्यय रु. 2,000 है। इसकी कीमत 10 प्रतिशत घटा दी जाती है। घटी हुई कीमत पर इसकी मांग का परिकलन कीजिए।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल - H.O.T.S.

25. मांग की कीमत लोच के चार निर्धारक तत्व स्पष्ट कीजिए।

26. निम्न समीकरणों में रिक्त स्थान भरो-

(i) $MU = \frac{?}{Q}$ (ii) $? = MU$

(iii) $MU_n = TU_n - ?$ (iv) $e_D = \frac{Q}{?} \frac{P}{Q}$

अन्तर स्पष्ट करो-

(क) सामान्य वस्तुएं और निम्न कोटि वस्तुएं।

(ख) पूरक वस्तुएं एवम् प्रतिस्थापन वस्तुए।

27. उपभोक्ता के सन्तुलन बिन्दु पर बजट रेखा का अनधिमान वक्र को स्पर्श करना क्यों आवश्यक है?

28. मांग वक्र के दाईं ओर खिसकाव एवं मांग वक्र के नीचे की ओर संचलन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

29. मांग वक्र में दाईं ओर खिसकाव एवं मांग वक्र के नीचे की ओर संचलन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

30. बजट रेखा को आय रेखा या कीमत रेखा क्यों कहा जाता है?

31. अनधिमान वक्र के सन्दर्भ में सीमान्त प्रतिस्थापन दर क्यों कम होती है?

32. सीमान्त उपयोगिता के कीमत से कम होने पर उपभोक्ता उस वस्तु का उपभोग बन्द क्यों कर देता है?

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न (6 अंक)

1. अनधिमान वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की शर्तें समझाइए। इन्हें एक रेखाचित्र पर दिखाइए।

2. उपयोगिता अनुसूची की सहायता से दो वस्तुओं के संबंध में उपभोक्ता के सन्तुलन की व्याख्या करो।

3. मांग वक्र का ढलान ऋणात्मक क्यों होता है?

4. मांग की लोच के निर्धारक तत्वों की व्याख्या करो।

5. मांग में वृद्धि (मांग वक्र का दाईं ओर खिसकाव) के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

6. रेखा चित्रों की सहायता से व्याख्या करो कि निम्न परिवर्तनों का एक वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा–

   (क) इस वस्तु के क्रेता की आय में कमी।

   (ख) पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि।

7. अनधिमान वक्र विधि के अन्तर्गत उपभोक्ता के संतुलन की शर्तें क्या हैं? यदि शर्तें पूरी नहीं होती तो संतुलन तक पहुँचने में क्या परिवर्तन होंगे?

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल – H.O.T.S.

8. संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से कुल व्यय विधि द्वारा निम्न स्थितियों में मांग की लोच का परिकलन कीजिए–

   (क) स्थिर कीमत पर मांग में गिरावट।

   (ख) स्थिर मांग पर कीमत में गिरावट।

9. चाय की कीमत में कमी कॉफी की संतुलन कीमत को कैसे प्रभावित करेगी? प्रभावों की श्रृंखला समझाइए।

10. कारण सहित लिखिए कि निम्न कथन सही है अथवा गलत।

    (क) दो अनधिमान वक्र कभी भी एक दूसरे को नहीं काटते।

    (ख) निम्न कोटि वस्तुओं का आय प्रभाव धनात्मक होता है।

    (ग) मांगी गई मात्रा में परिवर्तन, मांग के नियम की व्याख्या करता है।

11. निम्न कथन सत्य है या असत्य। कारण सहित स्पष्ट करो–

    (क) क्रेताओं को संख्या में वृद्धि मांग वक्र को दाईं ओर खिसका देती है।

    (ख) बाजार में किसी वस्तु के प्रतिस्थापन की उपस्थिति के कारण उस वस्तु की मांग लोचदार हो जाती है।

    (ग) एक सरल रेखीय मांग वक्र के मध्य बिन्दु पर मांग की लोच ईकाई के बराबर होती है।

अति लघु उत्तर प्रश्नों के उत्तर (1 अंक)

1. वस्तुओं में मानवीय आवश्यकताओं की सन्तुष्टि हेतु पाये जाने वाले गुण को उपयोगिता कहते हैं।
2. सीमान्त उपयोगिताओं के सतत योग द्वारा कुल उपयोगिता की गणना की जाती है। ($TU = \ \ MU$)
3. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम यह बताता है कि जैसे-जैसे किसी वस्तु की समान इकाइयों का लगातार प्रयोग किया जाता है तो प्रत्येक अगल इकाई से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है।
4. कुल उपयोगिता अधिकतम होगी।
5. $MU_x = P_x$ अर्थात् वस्तु से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता = वस्तु की कीमत।

6. उपभोक्ता सन्तुलन से अभिप्राय उस स्थिति से है जिस में एक उपभोक्ता अपनी दी हुई आय तथा बाजार कीमतों पर अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करता है।

7. उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय की क्रय शक्ति की कीमत है जिसकी सहायता से वह निश्चित कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।

8. उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं के ऐसे समूह को कहा जाता है कि जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय की सहायकता से खरीद सकता है।

9. बजट सेट दो वस्तुओं की मात्राओं के उन सभी बंडलों का संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय तथा दोनों वस्तुओं की कीमतों के आधार पर खरीद सकता है।

10. किसी वस्तु की स्थानापन्न वस्तु की कीमत में कमी से उस वस्तु की मांग घट जायेगी तथा स्थानापन्न वस्तु की मांग बढ़ जायेगी।

11. बजट दो वस्तुओं के उन सभी संभावित संयोगों को एक ही वक्र पर प्रदर्शित करती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय से खरीद सकता है।

12. ऊँचे अनधिमान वक्र पर उपभोक्ता को प्रत्येक बिन्दु पर नीचे अनधिमान वक्र की तुलना में दोनों वस्तुओं की अधिाक इकाइयां प्राप्त होती हैं।

13. अनधिमान वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर हो जाती है।

14. उपभोक्ता का अधिमान एकदिष्ट है यदि उपभोक्ता दो बंडलों के मध्य उस बंडल को प्राथमिकता देता है जिसमें दूसरे बंडल की तुलना में कम से कम एक वस्तु की अधिक मात्रा होती है और दूसरी वस्तु की मात्रा समान होती है।

15. वे वस्तुएं जिनका आय प्रभाव धनात्मक तथा कीमत प्रभाव ऋणात्मक हो वे सामान्य वस्तु कहलाती है।

16. निकटतम प्रतिस्थापन वस्तु उपलब्ध होने पर वस्तु की मांग लोचदार हो जाती है।

17. घटिया या निम्न कोटि वस्तु।

18. प्रतिस्थापन वस्तु की मांग बढ़ जायेगी।

19. मांग इकाई से अधिक लोचदार होगी।

20. किसी बाजार में एक निश्चित कीमत पर सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्रा का योग बाजार मांग कहलाता है।

21. मांग अनुसूची कीमत के विभिन्न स्तरों पर मांग की मात्राओं को तालिका के रूप में दर्शाती है।

22. मांग वक्र पर ऊपर की ओर संचलन, कीमत में वृद्धि के कारण होता है।

23. मांग वक्र बाईं ओर खिसकेगा।

24. इकाई के बराबर लोचदार।

25. पूर्णतया लोचदार।

26. क्योंकि पानी एक अनिवार्य आवश्यक वस्तु है।

27. कुल व्यय समान रहेगा।

28. वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती जाती है जिससे कुल उपयोगिता अधिकतम होने तक घटती दर से बढ़ती है।

29. क्योंकि पेन और स्याही पूरक वस्तुएं हैं।

30. कुल उपयोगिता घटना प्रारम्भ कर देगी।

यूनिट 3

उत्पादक का व्यवहार और पूर्ति

स्मरणीय बिंदु

उत्पादन फलन भौतिक आगतों तथा भौतिक उत्पादन के फलनात्मक संबंध को दर्शाता है।

$Ox = F(i., i_2 \ldots in)$

Ox x वस्तु का उत्पादन

f x फलन

i, i_2 in उत्पादन आगतें

कुल उत्पादन एक निश्चित समय में प्रयुक्त सभी परिवर्ती साधन (कारक) की इकाइयों द्वारा किए गए उत्पादन का योग होता है प्रति इकाई परिवर्ती कारक के कुल भौतिक उत्पादन को औसत उत्पादन कहते हैं।

$$AP = \frac{\text{कुल उत्पादन}}{\text{परिवर्ती कारक की ईकाई}}$$

परिवर्ती कारक की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने पर कुल भौतिक उत्पाद में जो शुद्ध परिवर्तन होता है उसे सीमांत उत्पादन कहते हैं

$$MP = \frac{\text{कुल उत्पादन में परिवर्तन (TP)}}{\text{परिवर्ती कारक की ईकाई में (R)}}$$

कारक के प्रतिफल : अल्पकाल में स्थिर साधनों की दी हुई मात्रा के साथ परिवर्ती कारक की अतिरिक्त इकाइयों का प्रयोग किया जाता है तो साधन के प्रतिफल लागू होते हैं जो कि स्थिर व परिवर्ती साधनों के विभिन्न अनुपातों में प्रयोग करने के फलस्वरूप कुल उत्पादन व सीमांत उत्पाद में होने वाले परिवर्तनों को प्रकट करते हैं। जो कि निम्न हैं-

(A) कारक के बढ़ते प्रतिफल : स्थिर साधनों के साथ जब परिवर्ती कारक की इकाइयों को लगातार बढ़ाकर प्रयोग किया जाता है तो प्रारंभ में कुल उत्पाद बढ़ती दर पर बढ़ता है।

(B) कारक के घटते प्रतिफल : स्थिर कारकों की निश्चित मात्रा के साथ जब परिवर्ती कारक की इकाइयों का लगातार घटाकर प्रयोग किया जाता है। तब एक अवस्था ऐसी आती है कि कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है अर्थात् कुल उत्पाद वृद्धि अनुपात परिवर्ती कारक अनुपात से कम होता है।

(C) कारक के ऋणात्मक प्रतिफल : यह कारक प्रतिफल नियम की अन्तिम अवस्था है जब स्थिर कारकों की निश्चित मात्रा के साथ परिवर्ती कारक की इकाइयां लगातार बढ़ाकर उत्पादन किया जाता है तो एक अवस्था ऐसी आती है जब कुल उत्पात घटने लगता है और सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

कुल, औसत व सीमांत उत्पाद के बीच सम्बन्ध

1. कुल उत्पादन उस स्थिति तक बढ़ती दर से बढ़ता है जब तक सीमांत उत्पाद में वृद्धि होती है।
2. कुल उत्पाद उस अवस्था तक घटती दर से बढ़ता है जब तक सीमांत उत्पाद घटता है किन्तु धनात्मक रहता है।
3. कुल उत्पाद उस अवस्था में घटने लगता है जब सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।
4. औसत उत्पाद तब तक बढ़ता है जब तक यह सीमांत उत्पाद से कम होता है सीमांत उत्पाद औसत उत्पाद को उसके अधिकतम बिन्दु पर काटता है। इसके बाद औसत उत्पाद घटने लगता है इस अवस्था में यह सीमांत उत्पाद से अधिक होता है।

- ❑ स्पष्ट व अस्पष्ट लागत के योग को लागत कहा जाता है।
- ❑ वे मौद्रिक भुगतान जो उत्पादक द्वारा ऐसी कारक व गैर कारक आगतों के प्रयोग के लिए किए जाते हैं जिनका स्वामी, उत्पादक स्वयं नहीं है स्पष्ट लागते कहलाती हैं।
- ❑ अस्पष्ट लागतें उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादक द्वारा प्रयुक्त निजी कारकों की लागत है।

अल्पकालीन लागतों का वर्गीकरण

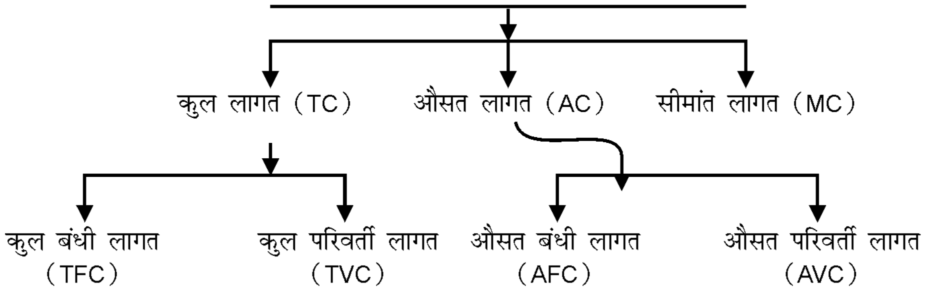

- कुल लागत कुल बंधी लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का योग होती है।
- कुल बंधी लागत उत्पादन के सभी स्तरों पर समान रहती है तथा उत्पादन के शून्य स्तर पर भी शून्य नहीं होती इसका वक्र X अक्ष के समांतर होता है।

$$TFC = TC - TVC$$

$$TFC = AFC \quad Q$$

- कुल परिवर्ती लागत उत्पादन में होने वाले परिवर्तन के अनुसार परिवर्तित होती है। यह उत्पादन के शून्य स्तर पर शून्य होती है। इसका वक्र कुल लागत वक्र के समांतर होता है।

$$TVC = TC - TFC$$

$$TVC = AVC \quad Q$$

- औसत लागत वस्तु की प्रति इकाई लागत को बताती है। यह औसत बंधी लागत व औसत परिवर्ती लागत का योग होती है।

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

$$AC = AFC + AVC$$

- औसत बंधी लागत प्रति इकाई बंधी लागत को बताती है।

$$AFC = \frac{TFC}{Q}$$

$$AC = AC + AVC$$

- वस्तु की प्रति इकाई परिवर्ती लागत को औसत परिवर्ती लागत कहते हैं

$$AVC = \frac{TFC}{Q}$$

$$AVC = AC + AFC$$

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने पर लागत में होने वाली शुद्ध वृद्धि को सीमांत लागत कहते हैं।

$$MC = TVC_n - TVC_{(n-1)}$$

$$MC = \frac{TVC}{Q}$$

अल्पकालीन लागतों के पारस्परिक संबंध

- कुल लागत वक्र तथा कुल परिवर्ती लागत वक्र एक दूसरे के समांतर होते हैं दोनों के बीच की लंबवत दूरी कुल बंधी लागत के समान होती है।
- उत्पादन स्तर में वृद्धि के साथ औसत बंधी लागत वक्र व औसत लागत वक्र के बीच अंतर बढ़ता चला जाता है, इसके विपरीत औसत परिवर्ती लागत वक्र व औसत लागत वक्र के अंतर में उत्पादन वृद्धि के साथ-साथ कमी आती है, किन्तु इनके वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते क्योंकि औसत बंधी लागत कभी शून्य नहीं होती।
- सीमांत लागत वक्र, औसत लागत व औसत परिवर्ती लागत वक्र को उन के न्यूनतम बिन्दु पर काटता है। कटाव बिन्दु के बाद उत्पादन वृद्धि से औसत लागत व औसत परिवर्ती लागत बढ़ने लगती है।
- औसत लागत व औसत परिवर्ती लागत तब तक घटती है जब तक ये सीमांत लागत से अधिक होती है और जब ये सीमांत लागत से कम होती है उस स्थिति में दोनों में वृद्धि होती है।
- उत्पादन की बिक्री से प्राप्त राशि को संप्राप्ति कहा जाता है।
- कुल संप्राप्ति वह राशि होती है जो एक विशेष समयावधि में उत्पाद की दी हुई इकाइयों की बिक्री से प्राप्त होती है।

  TR = कीमत (AR) x Q

  TR = MR

- बेची गई वस्तु की प्रति इकाई संप्राप्ति को औसत संप्राप्ति कहते है। यह वस्तु की कीमत के समान होता है।

  $AR = \frac{TR}{Q}$ कीमत

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने से कुल संप्राप्ति में होने वाली शुद्ध वृद्धि सीमांत कहलाती है।

  $MR = \frac{TR}{Q}$

- जब प्रति इकाई कीमत स्थिर रहती है अर्थात बाजार पूर्ण प्रतियोगी हो तब औसत, सीमांत व कुल संप्राप्ति का व्यवहार।

  (i) औसत व सीमांत संप्राप्ति उत्पादन के सभी स्तरों पर स्थिर रहती है तथा इनका वक्र X अक्ष के समांतर होता है।

(ii) कुल संप्राप्ति स्थिर दर से बढ़ती है तथा इसका वक्र मूल बिन्दू से गुजरने वाली सीधी धनात्मक ढाल वाली रेखा के समान होता है।

- जब वस्तु की अतिरिक्त मात्रा बेचने के लिए प्रति इकाई कीमत घटाई जाए अथवा एकाधिकार व एकाधिकारात्मक बाजार में AR, MR, व TR का व्यवहार

  (i) AR व MR वक्र नीचे की ओर गिरते हुए ऋणात्मक ढाल वाले होते हैं MR वक्र नीचे रहता है।

  (ii) MR, AR, की तुलना में दो गुणा दर से घटता है।

  (iii) TR में उस स्थिति तक वृद्धि होती है जब तक MR घनात्मक होता है जहां MR शून्य होगा वहां TR अधिकतम होता है, और जब MR ऋणात्मक हो जाता है तब TR घटने लगता है।

- उत्पादक संतुलन वह अवस्था है जिसमें उत्पादक को प्राप्त होने वाले लाभ अधिकतम होते हैं। लाभ आर्थिक लागत पर संप्राप्ति का आधिक्य होता है।

- **उत्पादक संतुलन की अवधारणा**

  सीमांत लागत व सीमांत संप्राप्ति विचारधारा: इस विचारधारा के अनुसार संतुलन की शर्तें निम्न हैं।

  (A) सीमांत संप्राप्ति व सीमांत लागत समान हों

  (B) सीमांत लागत वक्र संतुलन बिन्दु पर सीमांत संप्राप्ति वक्र को बढ़ते हुए नीचे से काटे।

  अथवा

  संतुलन बिन्दु के पश्चात उत्पादन वृद्धि की स्थिति में सीमांत लागत सीमांत संप्राप्ति से अधिक हो।

  पूर्ति : पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे एक फर्म या विक्रेता कीमत के विभिन्न स्तरों पर दी हुई समयावधि में बेचने के लिए तैयार होते हैं।

  व्यक्तिगत पूर्ति : व्यक्तिगत पूर्ति से अभिप्राय किसी वस्तु की एक फर्म द्वारा एक निश्चित समय में विभिन्न कीमतों पर की गई पूर्ति से है।

  स्टाक : एक निश्चित समय बिन्दु पर किसी फर्म के पास किसी वस्तु की जितनी कुल मात्रा उपलब्ध होती है उसे स्टाक कहते हैं।

  पूर्ति वक्र : पूर्ति अनुसूची का रेखाचित्रिय प्रस्तुतीकरण है जो वस्तु की मात्रा तथा कीमत के बीच धनात्मक संबंध को प्रकट करता है।

  पूर्ति का नियम : अन्य बाते समान रहने पर वस्तु की कीमत बढ़ने से पूर्ति बढ़ जाती है तथा कीमत कम होने से पूर्ति भी कम हो जाती है पूर्ति के निर्धारक तत्व (कीमत के अतिरिक्त) स्थिर रहते हैं।

पूर्ति फलन : किसी वस्तु की पूर्ति तथा उसके निर्धारक तत्वों के बीच फलानात्मक संबंधों को पूर्ति फलन कहते हैं। इसे निम्न समीकरण के रूप में लिखा जा सकता है:

SX = f(Px, T, Nf, Pf, Gp, Ex)

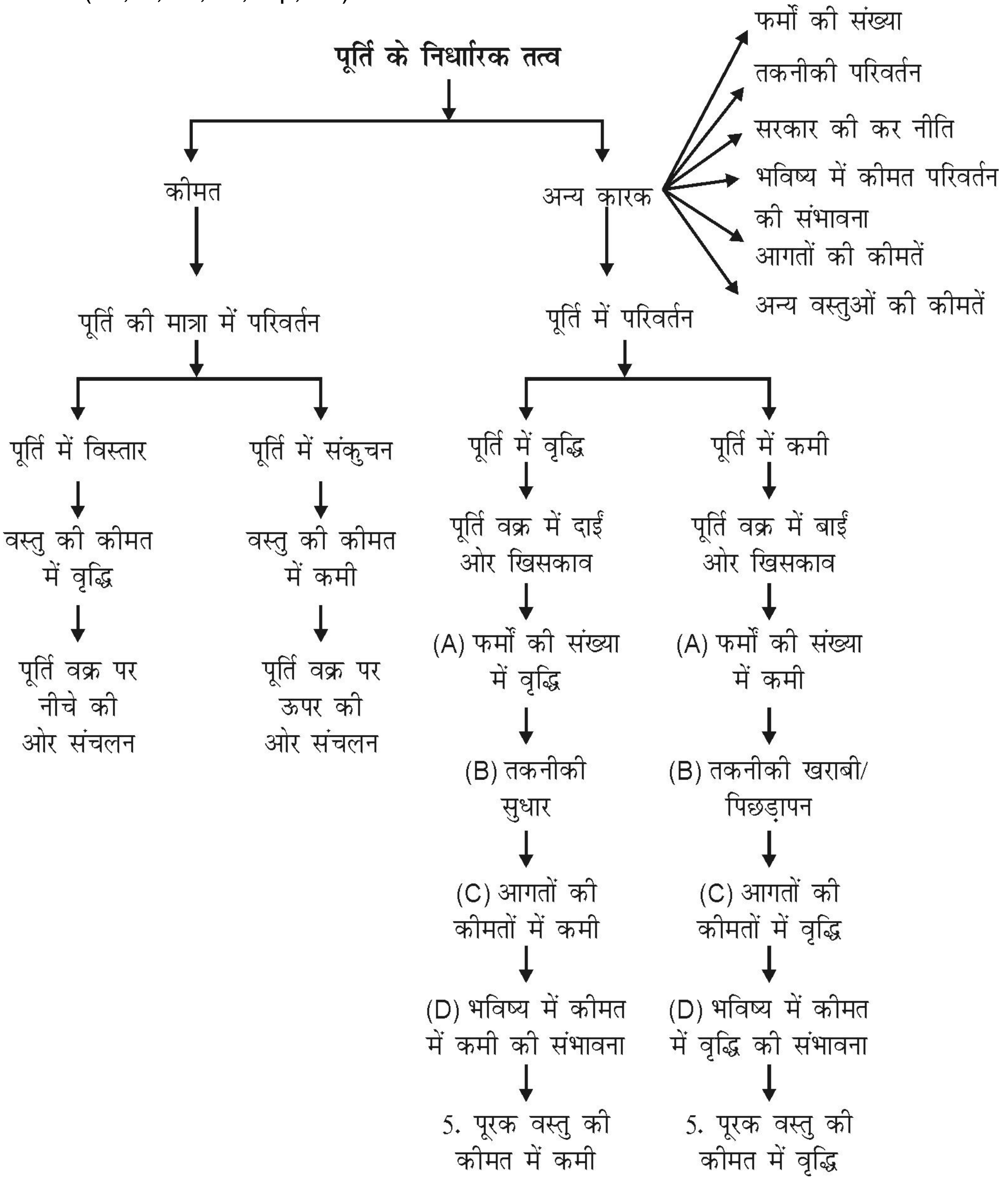

पूर्ति की कीमत लोच : पूर्ति की कीमत लोच वस्तु की कीमत में परिवर्तनों के कारण वस्तु की पूर्ति की मात्रा की अनुक्रियाशीलता को मापती है।

$$\text{पूर्ति की कीमत लोच (Es)} = \frac{\text{पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

पूर्ति की कीमत लोच ज्ञात करने की विधियाँ :

1. प्रतिशत विधि
2. ज्यामिति विधि

पूर्ति की कीमत लोच की श्रेणियाँ : सरल रेखीय पूर्ति वक्र के हर बिन्दु पर पूर्ति की लोच इकाई से अधिक होगी यदि पूर्ति वक्र X- अक्ष को उसके ऋणात्मक खण्ड में काटता है। पूर्ति की लोच इकाई से कम होगी जब पूर्ति वक्र X- अक्ष को उसके धनात्मक खण्ड में काटता है। मूल बिन्दु से किसी भी कोण पर गुजरने वाले पूर्ति वक्र पर पूर्ति की कीमत लोच इकाई के बराबर होगी।

एक अंक वाले प्रश्न

1. उत्पादन फलन को परिभाषित कीजिए।
2. सीमांत उत्पाद को परिभाषित कीजिए।
3. जब परिवर्ती आगत का सीमांत उत्पाद (MP) घट रहा हो लेकिन धनात्मक हो तब कुल उत्पाद की क्या स्थिति होती है।
4. जब औसत उत्पाद गिर रहा हो तब सीमांत उत्पाद तथा औसत उत्पाद में क्या संबंध होगा?
5. औसत उत्पाद की परिभाषा दीजिए।
6. उत्पादन के स्थिर कारकों से क्या अभिप्राय है? उदाहरण दीजिए।
7. कुल भौतिक उत्पाद सीमांत उत्पाद के किस व्यवहार के कारण अधिकतम होता है?
8. कुल उत्पाद में होने वाली कमी किस प्रकार सीमांत उत्पाद को प्रभावित करती है?
9. लागत से क्या अभिप्राय है?
10. स्पष्ट लागतों को परिभाषित कीजिए।
11. किस लागत का वक्र X अक्ष के समांतर होता है? क्यों?
12. अस्पष्ट लागतों से क्या अभिप्राय है?
13. सीमांत लागत को परिभाषित कीजिए।
14. उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ औसत कुल लागत व औसत परिवर्ती लागत के अंतर में कमी क्यों आती है?

15. संप्राप्ति को परिभाषित कीजिए।
16. वस्तु की प्रति इकाई कीमत में कमी होने पर औसत व सीमांत संप्राप्ति किस अनुपात में घटते हैं?
17. जब कुल संप्राप्ति में स्थिर दर से वृद्धि होती है उस अवस्था में औसत संप्राप्ति का व्यवहार कैसा होता है?
18. सीमांत संप्राप्ति से क्या अभिप्राय है?
19. जब सीमांत संप्राप्ति शून्य होती है तब कुल संप्राप्ति का व्यवहार कैसा होता है?
20. औसत लागत वक्र तथा औसत परिवर्ती लागत वक्र एक दूसरे को क्यों नहीं काटते हैं?
21. उत्पादक संतुलन से क्या अभिप्राय है?
22. सीमांत लागत व सीमांत संप्राप्ति विचारधारा के अनुसार उत्पादक संतुलन की कोई दो शर्ते लिखिए।
23. सामान्य लाभ से क्या अभिप्राय है?
24. समस्तर बिन्दु से क्या अभिप्राय है?
25. पूर्ति को परिभाषित कीजिए।
26. व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची से आप क्या समझते हैं?
27. बाजार काल से क्या अभिप्राय है?
28. पूर्ति फलन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
29. पूर्ति को प्रभावित करने वाले कोई दो कारक लिखिए।
30. पूर्ति में परिवर्तन से क्या अभिप्राय है?
31. पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचलन क्यों होता है?
32. कीमत में किस परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर ऊपर की ओर संचलन होता है।
33. कर की दरों में वृद्धि से पूर्ति कैसे प्रभावित होती है?
34. पूर्ति वक्र के बाईं ओर खिसकने से क्या अभिप्राय है?
35. आगतों की कीमत में कमी पूर्ति पर क्या प्रभाव डालती है?
36. पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल वाला क्यों होता है?
37. पूर्ति की लोच से क्या अभिप्राय है?
38. पूर्ति की लोच क्या होगी यदि पूर्ति वक्र Y- अक्ष के समान्तर हो?

39. पूर्ति की लोच ईकाई के बराबर किस स्थिति में होती है?

40. उत्पादक दी हुई कीमत पर वस्तु की पूर्ति कब बढ़ा देता है?

41. पूर्ति के नियम से क्या अभिप्राय है?

42. पूर्ति के नियम के दो अपवाद लिखिये।

43. पूर्ति में विस्तार क्यों होता है?

44. यदि किसी वस्तु की कीमत 10 प्रतिशत गिरने से पूर्ति की मात्रा 20 प्रतिशत गिर जाय तो इस वस्तु की पूर्ति की लोच क्या होगी?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

1. कुल परिवर्ती लागत वक्र कुल लागत वक्र के समांतर क्यों होता है?
2. उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ औसत बंधी लागत क्यों घटती है?
3. कुल बंधी लागत वक्र X अक्ष के समांतर क्यों होता है?
4. वस्तु की अतिरिक्त मात्रा बेचने पर सीमांत संप्राप्ति किस स्थिति में घटता हुआ होगा?
5. प्रति इकाई कीमत किस व्यवहार के कारण औसत व सीमांत संप्राप्ति समान होते हैं?
6. पूर्ति के नियम तथा पूर्ति की कीमत लोच में एक अन्तर लिखिए।
7. यदि पूर्ति वक्र X अक्ष को काटते हुए गुजरता है तो पूर्ति की लोच कैसी होती है?
8. कीमत में कमी होने पर उत्पादक पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर क्यों खिसकता है?
9. मूल बिन्दु से 40^0 के कोण पर गुजरने वाले पूर्ति वक्र पर पूर्ति की लोच कया होगी?
10. कीमत स्थिर रहने पर पूर्ति वक्र दायीं ओर कब खिसकता है?
11. कीमत बढ़ने पर पूर्ति अधिक क्यों हो जाती है?
12. एक फर्म के पूर्ति वक्र पर करो में वृद्धि का क्या प्रभाव होगा?

3-4 अंकों वाले प्रश्न

1. कारक के घटते प्रतिफल क्यों लागू होते हैं?
2. सीमांत उत्पादन में परिवतन के फलस्वरूप कुल उत्पादन का व्यवहार किस प्रकार का होगा?
3. कारक के वर्धमान प्रतिफल की व्याख्या सीमांत उत्पाद की सहायता से कीजिए?
4. कुल बंधी लागत व कुल परिवर्ती लागत में अंतर कीजिए।

5. रेखाचित्र की सहायता से औसत लागत, और परिवर्ती लागत व सीमांत लागत के बीच संबंध दर्शाइये।

6. अल्पकालीन औसत लागत वक्र 'U' आकार का क्यों होता है?

7. रेखाचित्र की सहायता से औसत लागत, औसत परिवर्ती लागत तथा औसत बंधी लागत के संबंध की व्याख्या कीजिए।

8. निम्न स्थितियों में कुल संप्राप्ति में क्या परिवर्तन होंगे जबकि
   (A) सीमांत संप्राप्ति गिर रही हो किन्तु धनात्मक हो।
   (B) सीमांत संप्राप्ति शून्य हो।
   (C) सीमांत संप्राप्ति ऋणात्मक हो।

9. सीमांत संप्राप्ति को परिभाषित कीजिए। उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत के स्थिर रहने पर औसत व सीमांत संप्राप्ति के संबंध की व्याख्या कीजिए।

10. जब बिक्री बढ़ाने के लिए कीमत घटानी पड़ती है तब सीमांत संप्राप्ति, कुल संप्राप्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है।

11. उत्पादक संतुलन से क्या अभिप्राय है? उत्पादक संतुलन की शर्तों का उल्लेख कीजिए।

12. सीमांत लागत व सीमांत आगम विचारधारा का प्रयोग करते हुए उत्पादक संतुलन की व्याख्या कीजिए।

13. एक फर्म दी गई कीमत पर वस्तु की कितनी भी इकाइयाँ बेच सकती है। इसके औसत संप्राप्ति और सीमांत संप्राप्ति वक्र एक ही रेखाचित्र पर खींचिए। व्याख्या कीजिए।

14. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए:

उत्पादन (इकाइयाँ)	कुल लागत (रु.)	औसत परिवर्ती लागत (रु.)	सीमान्त लागत (रु.)
1	90	---	30
2	---	27	---
3	---	---	27
4	180	30	---

15. एक फर्म की लागत अनुसूची नीचे दी गई है। 3 इकाइयों का उत्पादन करने पर इसकी औसत बंधी लागत 20 रु. है।

उत्पाद (इकाइयाँ)	1	2	3
औसत परिवर्ती लागत (रु.)	30	28	32

उत्पादन के दिए हुए प्रत्येक स्तर पर सीमान्त लागत और औसत कुल लागत का परिकलन कीजिए।

16. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए :

उत्पादन (इकाइयाँ)	औसत परिवर्ती लागत (रु.)	कुल लागत (रु.)	सीमान्त लागत (रु.)
1	---	60	20
2	18	---	---
3	---	---	18
4	20	120	---
5	22	---	---

17. बाजार पूर्ति से क्या अभिप्राय है? इसके दो निर्धारकों की व्याख्या कीजिए।

18. पूर्ति में परिवर्तन तथा पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

19. पूर्ति में वृद्धि के कारक लिख कर किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए।

20. पूर्ति में संकुचन तथा पूर्ति में कमी में अन्तर कीजिए।

21. पूर्ति की लोच से क्या अभिप्राय है? निम्न परिस्थितियों में पूर्ति की लोच क्या होगी?

    (क) पूर्ति की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन, कीमत में प्रतिशत परिवर्तन से अधिक हो,

    (ख) कीमत के बढ़ने या घटने पर भी पूर्ति स्थिर रहे।

22. A और B वस्तुओं की पूर्ति की लोच का अनुपात 1:1.5 है। A की कीमत 20 प्रतिशत घटने से उसकी पूर्ति 40 प्रतिशत घटती है। यदि B की कीमत 10 रु. प्रति इकाई से बढ़कर 11 रु. प्रति इकाई होती है तो उसकी पूर्ति में होने वाली प्रतिशत वृद्धि का परिकलन कीजिए।

(उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) H.O.T.S.

1. स्पष्ट कीजिए कि किन कारणों से परिवर्ती कारक के वर्धमान प्रतिफल ह्रासमान प्रतिफल में बदल जाते हैं?

2. जब कुल संप्राप्ति वक्र मूल बिन्दु से होता हुआ धनात्मक ढलान होता है तब औसत संप्राप्ति वक्र का आकार कैसा होगा? तालिका व रेखाचित्र द्वारा समझाइए।

3. पूर्ति तालिका क्या है? प्रौद्योगिकी में परिवर्तन का किसी वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? समझाइए।

4. निम्न कथन सही है या गलत - कारण बताइए

    (A) उत्पादक संतुलन की अवस्था में सीमांत लागत घटती हुई होगी

    (B) AR वक्र MR वक्र के सदैव ऊपर रहता है।

5. निम्न कथन सही है या गलत, कारण दीजिए-

(A) सीमांत संप्राप्ति घटते समय औसत संप्राप्ति से दुगनी दर से घटती है।

(B) औसत लागत तभी बढ़ती है जब सीमांत लागत उसे बढ़ते हुए काटती है।

6. निम्न कथन सत्य है या असत्य, कारण सहित समझाइए।

(A) कारक के घटते प्रतिफल तब लागू होते हैं जब औसत उत्पाद घटना प्रारम्भ कर देता है।

(B) AC तथा AVC वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते।

7. पूर्ति वक्र का बाईं ओर खिसकाव तथा पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचलन में क्या अन्तर है?

8. व्याख्या कीजिए कि पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन पूर्ति के नियम का स्पष्टी करण है।

9. निम्न कथन सही है अथवा गलत, कारण सहित बताइये।

(क) बाजार काल में पूर्ति में परिवर्तन संभव नहीं होता।

(ख) भविष्य में कीमत वृद्धि की संभावना वर्तमान में बाजार पूर्ति में वृद्धि कर देती है।

10. पूर्ति की लोच को मापने की ज्यामितिक विधि की व्याख्या रेखा चित्र की सहायता से कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. जब केवल एक आगत (कारक) में वृद्धि की जाती है तथा शेष आगत स्थिर रहते हैं तब कुल उत्पाद पर क्या प्रभाव पड़ता है? रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

2. उत्पादक के संतुलन से क्या अभिप्राय है? 'सीमांत लागत और सीमांत संप्राप्ति' दृष्टिकोण से उत्पादक के संतुलन की शर्तें समझाइए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

3. निम्न कथन सत्य हैं या असत्य, कारण सहित व्याख्या कीजिए।

(A) सीमांत उत्पाद वक्र के अन्तर्गत आने वाला क्षेत्र कुल उत्पाद होता है।

(B) जब सीमांत उत्पाद घटता है तब औसत उत्पाद सदैव घटता है।

(C) उत्पादन की पहली इकाई की सीमांत लागत MC = AVC (औसत परिवर्ती लागत)।

4. अपने उत्तर के लिए कारण देते हुए बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत

(A) जब सीमांत संप्राप्ति स्थिर होती है और शून्य नहीं होती तो कुल संप्राप्ति भी स्थिर होगी।

(B) जैसे ही सीमांत लागत बढ़ने लगती है औसत परिवर्ती लागत भी बढ़ने लगती है।

(C) चाहे कारक के ह्रासमान प्रतिफल हों या वर्धमान प्रतिफल हो कुल उत्पाद हमेशा बढ़ता है।

5. कारण देते हुए बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत:

(अ) जब कुल संप्राप्ति स्थिर होती है तो औसत संप्राप्ति भी स्थिर होगी।

(ब) सीमांत लागत के बढ़ते हुए होने पर भी औसत परिवर्ती लागत घट सकती है।

(स) जब सीमांत उत्पाद घटता है तो औसत उत्पाद भी घटेगा।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. उत्पादन फलन भौतिक आगतों व निर्गतों के फलनात्मक संबंध को स्पष्ट करता है।
2. परिवर्ती कारक की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने पर कुल उत्पाद में होने वाला शुद्ध परिवर्तन सीमांत उत्पाद कहलाता है।
3. कुल उत्पाद घटती दर वे बढ़ता है।
4. MP भी गिरता है लेकिन AP से अधिाक तेजी से गिरता है।
5. औसत उत्पाद, परिवर्ती कारक के प्रति इकाई उत्पादन को बताता है।
6. उत्पादन के वे कारण जिन्हें अल्पकाल में परिवर्तित करना संभव नहीं होता।

   उदाहरण: मशीन, भूमि
7. परिवर्ती कारक का सीमांत उत्पाद जब शून्य होता है तब कुल भौतिक उत्पाद अधिकतम होता है।
8. कुल उत्पाद में कमी होने पर सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।
9. लागत, स्पष्ट तथा अस्पष्ट लागतों का योग होती है।
10. वे मौद्रिक भुगतान जो उत्पादक द्वारा ऐसी कारक व गैर कारक आगतों के प्रयोग के लिए किए जाते हैं जिनका स्वामी उत्पादक स्वयं नहीं होता स्पष्ट लागत कहलाते हैं।
11. कुल बंधी लागत वक्र क्योंकि यह उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर समान रहती है।
12. उत्पादन प्रक्रिया में प्रयुक्त उत्पादक के निजी कारकों की लागत
13. वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने पर कुल लागत में होने वाली शुद्ध वृद्धि सीमांत लागत कहलाती है।
14. क्योंकि औसत बंधी लागत उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ घटती चली जाती है।
15. उत्पाद की बिक्री से प्राप्त राशि को संप्राप्ति कहते हैं।

16. सीमांत संप्राप्ति, औसत संप्राप्ति से दोगुनी दर से घटता है।

17. औसत संप्राप्ति स्थिर रहता है।

18. वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई की बिक्री से कुल संप्राप्ति में जो शुद्ध वृद्धि होती है।

19. कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है।

20. क्यों AFC उत्पादन के किसी भी स्तर पर शून्य नहीं होती।

21. उत्पादक संतुलन वह अवस्था है जिसमें उत्पादक को प्राप्त होने वाले लाभ अधिकतम होते है।

22. 1. सीमांत संप्राप्ति = सीमांत लागत

    2. सीमांत संप्राप्ति वक्र को सीमांत लागत वक्र बढ़ते हुए काटता है।

23. सामान्य लाभ वह स्थिति है जिसमें फर्म की कुल लागत व कुल संप्राप्ति समान होती है तथा फर्म सामान्य लाभ के रूप में केवल अपनी अस्पष्ट लागते प्राप्त करती हैं।

24. वह बिन्दु जहां TR = TC

25. पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे कोई फर्म या विक्रेता कीमत के विभिन्न स्तरों पर बेचने के लिए तैयार है।

26. व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची कीमत के विभिन्न स्तरों पर एक उत्पाद की पूर्ति की विभिन्न मात्राओं को तालिका के रूप में प्रदर्शित करती है।

27. वह अति अल्प काल जिसमें कोई फर्म मांग या कीमत में परिवर्तन के अनुरूप पूर्ति में परिवर्तन नहीं कर पाती है।

28. पूर्ति फलन किसी वस्तु की पूर्ति तथा उसके निर्धारकों के बीच फलस्वरूप संबंध को बताता है।

29. 1. फर्मों की संख्या

    2. तकनीकी परिवर्तन

30. पूर्ति में परिवर्तन कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन का परिणाम होता है।

31. कीमत में कमी के कारण।

32. कीमत में वृद्धि के कारण।

33. कर की दरों में वृद्धि से उत्पादन लागत में वृद्धि होती है परिणामत: उत्पादक के लाभ कम हो जाते हैं जिससे पूर्ति में कमी आती है।

34. कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब वस्तु की पूर्ति घट जाती है तो पूर्ति वक्र बाईं ओर खिसक जाता है।

35. आगतों की कीमत में कमी से उत्पादन लागत घटती है जिससे लाभ मार्जिन बढ़ने पर उत्पादक पूर्ति में वृद्धि करता है।

36. कीमत व पूर्ति के धनात्मक संबंध के कारण पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है।

37. पूर्ति की लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपातिक माप है।

38. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति।

39. कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाले परिवर्तन का अनुपात यदि समान हो तो पूर्ति ईकाई के बराबर लोचदार होती है।

40. किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जैसे (i) आगतों की कीमतों में कमी (ii) तकनीक में सुधार

41. पूर्ति का नियम कीमत तथा पूर्ति के धनात्मक संबंध की व्याख्या करता है अर्थात् यह स्पष्ट करता है कि ''अन्य कारकों के स्थिर रहने पर कीमत बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है तथा कीमत घटने से पूर्ति घट जाती है''।

42. (i) दुर्लभ वस्तुएं (ii) बाजार काल (iii) प्राकृतिक कारक

43. अन्य कारकों के समान रहने पर कीमत में वृद्धि के फल स्वरूप पूर्ति में विस्तार होता है।

44. पूर्ति की लोच (Es) = $\frac{\text{मात्रा में \% परिवर्तन}}{\text{कीमत में \% परिवर्तन}} \quad \frac{20\%}{10\%} \quad 2$

(उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) H.O.T.S.

1. कुल लागत, कुल बंधी लागत व कुल परिवर्ती लागत का योग होती है और कुल बंधी लागत उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर समान रहती है।
2. औसत बंधी लागत की गणना कुल बंधी लागत से की जाती है जो कि उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर समान रहती है।
3. कुल बंधी लागत उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर समान रहती है।
4. जब वस्तु की अतिरिक्त मात्रा बेचने पर प्रति इकाई कीमत घट रही हो।
5. प्रति इकाई कीमत समान रहने के कारण।
6. पूर्ति का नियम परिवर्तन की दिशा प्रदर्शित करता है जब कि पूर्ति की कीमत लोच परिवर्तन के परिणाम को दर्शाती है।
7. इकाई से कम लोचदार या बेलोचदार।
8. कीमत में कमी होने से उत्पादक के लाभ मार्जिम कम हो जाते हैं जिससे वह पूर्ति में कमी करता है। परिणामत: पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर खिसकता है।
9. इकाई के बराबर लोचदार होगी।
10. कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब पूर्ति में वृद्धि हो जाती है।
11. कीमत बढ़ने पर उत्पादक के लाभ मार्जिन बढ़ जाते हैं अर्थात् कीमत व लागत का अन्तर धनात्मक रूप से बढ़ जाता है। जिससे उत्पादक पूर्ति में वृद्धि करता है।
12. पूर्ति वक्र बाईं ओर खिसक जायेगा।

यूनिट 4

बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण

स्मरणीय बिंदु

- ❑ बाजार से अभिप्राय एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें एक वस्तु के क्रेता व विक्रेता वस्तु के क्रय विक्रय हेतु एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं।

बाजार के प्रमुख रूप

पूर्ण प्रतियोगिता — अपूर्ण प्रतियोगिता

अपूर्ण प्रतियोगिता → एकाधिकार बाजार, एकाधिकारी प्रतियोगिता, अल्पाधिकार

- ❑ पूर्ण प्रतियोगिता से अभिप्राय बाजार के उस स्वरूप से है जिसमें बहुत से विक्रेता अपनी समरूप वस्तुओं को एक समान कीमत पर बिना किसी प्रतियोगिता के ऐसे क्रेताओं को बेचते हैं जिन्हें बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है।
- ❑ पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत स्थिर रहने के कारण औसत व सीमांत संप्राप्ति समान रहते हैं। अतः इनके वक्र Ox अक्ष के समांतर होते हैं।

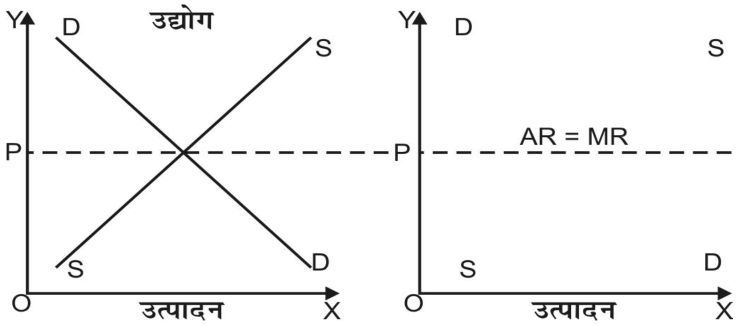

- पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण उद्योग (क्रेता-विक्रेताओं का समूह) द्वारा किया जाता है जो कि मांग एवं पूर्ति की शक्तियों से प्रभावित होता है। कोई भी व्यक्तिगत फर्म या उपभोक्ता किसी वस्तु की कीमत या पूर्ति को प्रभावित नहीं कर पाता। अत: उद्योग कीमत निर्धारक तथा फर्म कीमत स्वीकार होती है।

एकाधिकार बाजार (Monopoly Market)

1. यह बाजार का वह रूप है जिसमें वस्तु का अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है। वस्तु की निकट स्थानापन्न वस्तु का अभाव पाया जाता है।
2. एकाधिकार बाजार में वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होने के कारण फर्म को दीर्घकाल में भी असामान्य लाभ प्राप्त होते हैं।
3. एकाधिकार बाजार में वस्तु की मांग इकाई से कम लोचदार ($ed<1$)होती है। अत: मांग वक्र का ढाल अत्यंत तीव्र होता है।
4. वस्तु की प्रति इकाई कीमत स्थिर ना रहने के कारण एकाधिकार बाजार में औसत व सीमांत संप्राप्ति वक्र ऋणात्मक ढाल वाले होते हैं।

एकाधिकारी प्रतियोगिता (Monopoly Competition)

1. यह बाजार की वह अवस्था है जिसमें फर्मों की संख्या अधिक होती है और सभी फर्म कड़े प्रतियोगी वातावरण में अपनी भिन्न-भिन्न रूप, आकार या रंग वाली वस्तुएं (वस्तु विभेद) ऐसे क्रेताओं को बेचती हैं जिन्हें बाजार का अपूर्ण ज्ञान होता है।
2. इस प्रतियोगिता में विक्रय लागतें बहुत अधिक होती हैं।
3. एकाधिकारी प्रतियोगिता में सभी फर्म एक दूसरे की कीमत को ध्यान में रखकर अपनी वस्तु की कीमत निर्धारित करती है।
4. एकाधिकारी प्रतियोगिता में वस्तु की मांग इकाई से अधिक लोचदार होने के कारण मांग वक्र सरल ढाल वाला होता है।

अल्पाधिकार (Oligopoly)

1. अल्पाधिकार बाजार का ऐसा स्वरूप है जिसमें वस्तु के विक्रेताओं की संख्या दो से अधिक लेकिन बहुत अधिक नहीं होती। सभी फर्म वस्तु की बाजार पूर्ति का एक निश्चित मात्रा में उत्पादन करती है।

2. सभी फर्में समरूप या विभेदात्मक वस्तुओं का उत्पादन करती है।

3. अल्पाधिकारी बाजार में नई फर्म का प्रवेश असंभव नहीं लेकिन कठिन होता है।

4. अल्पाधिकार बाजार में मांग वक्र अनिश्चित होता है।

5. अल्पाधिकार बाजार में कीमत निर्धारण हेतु फर्मों में अन्तनिर्भरता होती है।

6. अल्पाधिकार को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. सहयोगी अल्पाधिकार : अल्पाधिकार का वह रूप जिसमें सभी फर्म आपसी सहयोग के आधार पर उत्पादन की मात्रा तथा कीमत निर्धारित करती है।

2. असहयोगी अल्पाधिकार : अल्पाधिकार का वह रूप जिसमें कीमत तथा उत्पाद की मात्रा निर्धारित करते समय फर्मों के बीच सहयोगी व्यवहार की अपेक्षा प्रतियोगी व्यवहार होता है तथा प्रत्येक फर्म अपनी प्रतियोगी फर्मों की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखती है।

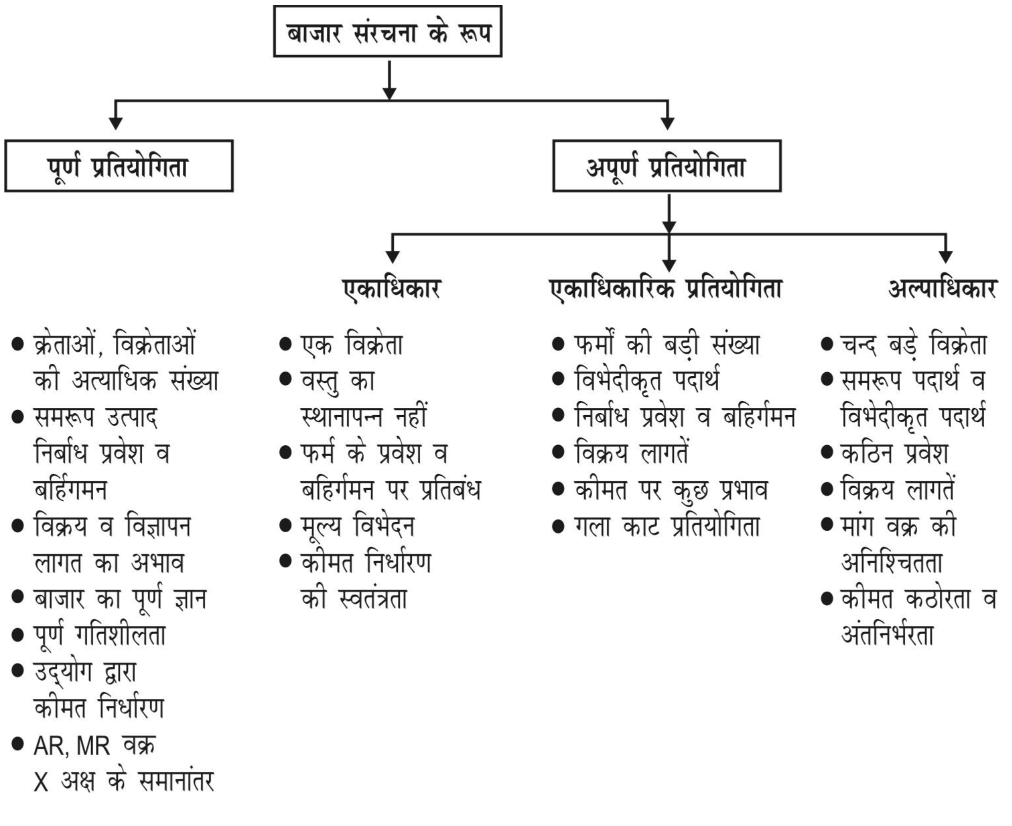

एक अंक वाले प्रश्न

1. बाजार को परिभाषित कीजिए।
2. समरूप उत्पाद से क्या अभिप्राय है?
3. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत किस प्रकार निर्धारित होती हैं?
4. पूर्ण व एकाधिकारी प्रतियोगिता में कौन सी विशेषताएं समान होती हैं।
5. यदि वर्तमान फर्में असामान्य लाभ कमा रही हो तो उद्योग में फर्मों की संख्या पर किस प्रकार परिवर्तन होगा?
6. एकाधिकार बाजार को परिभाषित कीजिए।
7. किस बाजार में फर्म व उद्योग के बीच अंतर नहीं होता।
8. सामान्य लाभ क्या हैं?
9. किस बाजार में फर्म कीमत स्वीकारक होती है।
10. व्यापार (cartel) गुट क्या होता है?
11. एकाधिकार बाजार में AR वक्र और मांग वक्र में क्या संबंधा होगा?
12. कीमत विभेद से क्या अभिप्राय है?
13. अल्पाधिकार को परिभाषित कीजिए।
14. संतुलन कीमत से क्या अभिप्राय है?
15. आधिक्य पूर्ति की स्थिति कब जन्म लेती है?
16. संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि मांग में वृद्धि, पूर्ति में वृद्धि से अधिक है?
17. मांग और पूर्ति दोनों में एक साथ वृद्धि होने पर किस स्थिति में संतुलन कीमत अप्रभावित रहती है।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल (H.O.T.S.)

1. एकाधिकारी प्रतियोगिता में औसत संप्राप्ति व मांग वक्र में क्या संबंध होता है?
2. कीमत विभेद की नीति की सफलता, मांग की लोच पर किस प्रकार निर्भर करती है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. बाजार में निर्बाध प्रवेश की स्वतंत्रता पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म के लाभ पर क्या प्रभाव डालती है।
2. एकाधिकारी प्रतियोगिता का मांग वक्र पूर्ण प्रतियोगिता के मांग वक्र से किस प्रकार भिन्न होता है?
3. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म कीमत स्वीकारक क्यों होती है?
4. पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार का पूर्ण ज्ञान क्रेता के लिए किस प्रकार लाभदायक होता है स्पष्ट कीजिए।
5. पूर्ण प्रतियोगिता में 'बड़ी संख्या में विक्रेता' विशेषता के परिणाम समझाइए।
6. मांग तथा पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि बाजार में प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक है।
7. अल्पाधिकार बाजार एकाधिकार बाजार से किस प्रकार भिन्न है?
8. आधिक्य मांग को चित्र की सहायता से समझइये।
9. सहयोगी गठबंधन व गैर गठबंधान अलपाधिकार में अंतर बताइये।
10. पूर्ण प्रतियोगी बाजार में संतुलन कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है? तालिका की सहायता से समझाइये।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल (H.O.T.S.)

11. पूर्ण प्रतियोगिता में MR = AR परन्तु एकाधिकार व एकाधिकारिक प्रतियोगिता में MR<AR क्यों होता है?
12. किस स्थिति में मांग में कमी होने पर भी वस्तु की कीमत में कमी नहीं होती।
13. अल्पाधिकार बाजार में प्रवेश कठिन क्यों है?
14. निकटतम स्थानापन्न वस्तु की उपलब्धता किस प्रतियोगिता में पायी जाती है? यह कीमत पर क्या प्रभाव डालती है।

6 अंक वाले प्रश्न

1. एकाधिकारिक प्रतियोगिता की विशेषताओं का वर्णन करो।
2. पूर्ण प्रतियोगिता में निम्न लिखित विशेषताएं समझाइए।

(क) क्रेताओं और विक्रेताओं की बड़ी संख्या

(ख) समरूप उत्पाद

3. अल्पाधिकार की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करो।

4. एक वस्तु का बाजार संतुलन में है। उस वस्तु की पूर्ति में 'वृद्धि' हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण पड़ने वाले प्रभावों की श्रृंखला की व्याख्या कीजिए। एक संख्यात्मक उदाहरण दीजिए।

5. वस्तु की संतुलन कीमत की परिभाषा दीजिए। यह कैसे निर्धारित की जाती है। एक अनुसूची की सहायता से समझाइये।

6. प्रतिस्थापन वस्तुओं की कीमतों में कमी के कारण किसी वस्तु की संतुलन कीमत व संतुलन मात्रा पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या करो।

'गैर-सहयोगी' और 'सहयोगी' अल्पाधिकार के बीच अंतर बताइए। अल्पाधिकार की निम्नलिखित विशेषताएं समझाइए।

(क) कुछ फर्में

(ख) गैर-कीमत प्रतियोगिता

7. एक वस्तु की मांग में ''कमी'' के उसकी संतुलन कीमत और मात्रा पर प्रभाव की एक रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

8. मांग व पूर्ति में एक साथ कमी होने पर किस स्थिति में निम्न परिणाम प्राप्त होंगे।

(क) साम्य कीमत में कोई परिवर्तन नहीं

(ख) संतुलन कीमत में कमी

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. बाजार से अभिप्राय ऐसी व्यवस्था से है जिसमें क्रेता व विक्रेता वस्तु के क्रय व विक्रय हेतु एक दूसरे के सम्पर्क में आते हैं।

2. जब सभी फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुएं एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न हो अर्थात रंग, रूप, आकार, वजन, पैकिंग के आधार पर समान हो।

3. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत, उद्योग द्वारा मांग व पूर्ति की शक्तियों के आधार पर निर्धारित की जाती है।

4. (क) फर्मों का निर्बाध प्रवेश व बहिर्गमन

(ख) साधनों की पूर्ण गतिशीलता

5. उद्योग में फर्मों की संख्या बढ़ जायेगी। क्योंकि असामान्य लाभ कमाने के लिए नई फर्में उद्योग में प्रवेश करेंगी।

6. बाजार का वह रूप जिसमें वस्तु का अकेला विक्रेता होता है। वस्तु की निकटतम स्थानापन्न वस्तु का अभाव पाया जाता है।

7. एकाधिकार बाजार

8. यह वह न्यूनतम लाभ है जो फर्म को उद्योग में रहने के लिए आवश्यक है। सामान्य लाभ अस्पष्ट लागतों के रूप में कुल लागत का एक भाग है।

9. पूर्ण प्रतियोगिता में।

10. यह व्यापारियों का ऐसा गुट है जो मिलकर वस्तु के उत्पादन स्तर और कीमत का निर्धारण करके बाजार में एकाधिकारी शक्तियों का प्रयोग करता है।

11. एकाधिकारी बाजार में AR वक्र व मांग वक्र एक ही होते हैं।

12. कीमत विभेद विक्रय की ऐसी नीति है जिसके अंतर्गत विक्रेता एक समान वस्तुओं को अलग-अलग क्रेताओं को अलग-अलग कीमतों पर बेचता है।

13. अल्पाधिकार वह बाजार है जिसमें वस्तु के विक्रेता या उत्पादकों की संख्या दो से अधिक किन्तु बहुत अधिक नहीं होती। सभी फर्में समरूप या विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन करती हैं।

14. जिस कीमत पर वस्तु की बाजार मांग व बाजार पूर्ति बराबर होती है।

15. जब वस्तु की प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक हो जाने पर पूर्ति मांग से अधिक हो जाए।

16. यदि मांग में वृद्धि पूर्ति में वृद्धि से अधिक हो तो संतुलन कीमत बढ़ जायेगी।

17. मांग व पूर्ति दोनों में एक समान अनुपात में वृद्धि की स्थिति में संतुलन कीमत अप्रभावित रहती है।

उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल (H.O.T.S.)

1. दोनों ऋणात्यक ढाल वाले होते हैं।

3-4 अंक वाले प्रश्नों के लिये संकेत (Hints)

13. क्योंकि वस्तु विशेष को बेचने वाली चंद फर्में होती हैं इसलिए आपसी मेल जोल और सामूहिक व्यवहार नई फर्मों को प्रवेश करने से रोकने का प्रयास करते हैं।

6 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत

6. स्थानापन्न वस्तु की कीमत में कमी होने पर उस वस्तु की मांग कम हो जायेगी अतः संतुलन कीमत कम हो जायेगी और स्थानापन्न वस्तु की कीमत बढ़ने पर वस्तु की संतुलन कीमत बढ़ जायेगी।

यूनिट 5

मांग व पूर्ति वक्रों के उपकरणों का सरल अनुप्रयोग

स्मरणीय बिंदु

- वक्रों के माध्यम से ऐसे चरों का अध्ययन किया जाता है जो परस्पर ऋणात्मक या धनात्मक रूप से संबंधित होते हैं। जैसे- मांग वक्र व पूर्ति वक्र
- चर दो प्रकार के होते हैं। (क) स्वतंत्र चर (ख) आश्रित चर
- साधारणतया स्वतंत्र चरों को OY अक्ष पर तथा आश्रित चरों को OX अक्ष पर निरूपित किया जाता है।
- वक्र बनाते समय OY तथा OX अक्ष पर संख्यात्मक तथ्यों का निरूपण एक उचित अनुपात में ही करना चाहिए।
- जिन संबंधों को मौखित तर्कों द्वारा समझना कठिन होता है उन्हें वक्रों द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।
- वक्रों का मस्तिष्क पर लंबे समय तक प्रभाव रहता है।
- अर्थशास्त्र में मांग व पूर्ति तथ्यों के प्रस्तुतिकरण के लिए किया जाता है।

    1. मांग व पूर्ति तथ्यों के प्रस्तुतिकरण के लिए
    2. विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के मध्य संतुलन स्थापित करने के लिए
    3. मांग व पूर्ति में होने वाले परिवर्तनों का संतुलन व बाजार कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रदर्शन हेतु।
    4. मांग व पूर्ति की लोच की विभिन्न श्रेणियों के चित्रमय प्रदर्शन हेतु
    5. मांग आधिक्य व पूर्ति आधिक्य की स्थितियों में न्यूनतम व उच्चतम कीमत के निर्धारण की व्याख्या हेतु।

- व्यावहारिक जीवन में मांग वक्र द्वारा सरकार 'उच्चतम कीमत' का निर्धारण और 'न्यूनतम कीमत' का निर्धारण करती है।
- मांग व पूर्ति की लोच के अध्ययन से करों का निर्धारण करती है।
- मांग व पूर्ति वक्र निम्न संतुलनों की सरल व्याख्या करते हैं।

  1. ब्याज दर (मुद्रा की मांग व पूर्ति)
  2. कारकों का कीमत निर्धारण
  3. कर निर्धारण में
  4. मजदूरी की दर
  5. विदेशी विनिमय का निर्धारण
  6. उपभोक्ता की बचत

यूनिट 6

राष्ट्रीय आय एवं संबद्ध समाहार

स्मरणीय बिंदु:

- **वस्तुएं** : अर्थशास्त्र में वस्तुएं वे सभी भौतिक पदार्थ (प्राकृतिक या मानवनिर्मित) तथा सेवाएं होती है जिनका कोई बाजार मूल्य होता है।
- **उपभोक्ता वस्तुएं** : वे वस्तुएं जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।
- **पूंजीगत वस्तुएं** : ये वे अंतिम वस्तुएं है जो उत्पादन में सहायक होती है तथा आय सृजन के लिए प्रयोग की जाती है।
- **अंतिम वस्तुएं** : वे वस्तुएं जो उपभोग व निवेश के लिए उपलब्ध होती है, इनका पुन: विक्रय नही होता है।
- **मध्यवर्ती वस्तुएं** : ये वे वस्तुएं है जिनकी पुन: बिक्री की जा सकती है ये प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकता को पूरा नहीं करती बल्कि अंतिम वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग की जाती है।
- **निवेश** : एक निश्चित समय में पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में वृद्धि निवेश कहलाता है। इसे पूंजी निर्माण भी कहते है।
- **मूल्यह्रास** : सामान्य टूट-फूट या अप्रचलन के कारण अचल परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट को मूल्यह्रास या अचल पूंजी का उपभोग कहते है।
- **सकल निवेश** : एक निश्चित अवधि काल में बाजार मूल्य पर पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में कुल वृद्धि, सकल निवेश कहलाती है।
- **निवल निवेश** : एक अर्थव्यवस्था में पूंजीगत वस्तुओं में नए योग का माप या नई पूंजी रचना निवल निवेश कहलाता है।

  निवल निवेश : सकल निवेश – घिसावट

- **स्टाक :** स्टाक एक ऐसी मात्रा (चर) है जो किसी निश्चित समय बिंदु पर मापी जाती है।
- **प्रवाह :** प्रवाह एक ऐसी मात्रा (चर) है जिसे समय अवधि के संदर्भ में मापा जाता है।
- **आर्थिक सीमा :** यह सरकार द्वारा प्रशासित व भौगोलिक सीमा है जिसमें व्यक्ति, वस्तु व पूंजी का स्वतन्त्र प्रवाह होता है।
- **आर्थिक सीमा क्षेत्र :**

  (1) राजनैतिक, समुद्री व हवाई सीमा

  (2) विदेशों में स्थित दूतावास, वाणिज्य दूतावास सैनिक प्रतिष्ठान, राजनयिक भवन आदि

  (3) जहाज तथा वायुयान जो दो देशों के बीच आपसी सहमति से चलाए जाते है।

  (4) मछली पकड़ने की नौकाएं, तेल व गैस निकालने वाले यान तथा तैरने वाले प्लेटफार्म जो देशवासियों द्वारा चलाए जाते है।
- **सामान्य निवासी :-** किसी देश का सामान्य निवासी उस व्यक्ति अथवा संस्था को माना जाता है जिसके आर्थिक हित उसी देश की आर्थिक सीमा में केन्द्रित हों जिसमें वह रहता है।
- **उत्पादन का मूल्य :-** एक उत्पादन इकाई द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं व सेवाओं का बाजार मूल्य उत्पादन का मूल्य कहलाता है।
- **बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (NDP_{MP})**

  $NDP_{MP} = GDP_{MP} -$ मूल्यह्रास
- **देशीय आय (NDP_{FC})** एक देश की घरेलू सीमा में एक लेखा वर्ष में उत्पादन कारको की आय का योग जो कारकों द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले प्राप्त होती है।

राष्ट्रीय समाहार

- **बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP_{MP})** एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में देश की घरेलू सीमा व विदेशो में उत्पादित अंतिम पदार्थो व सेवाओं के सकल बाजार मूल्य को **GNP_{MP}** कहते है।
- **बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP})**

  $NNP_{MP} = GNP_{MP} -$ मूल्यह्रास
- **राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})** एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक लेखा वर्ष में देश की घरेलू सीमा व शेष विश्व से अर्जित साधन आय का योग राष्ट्रीय आय कहलाती है।

  $NNP_{FC} = NDP_{FC} + NFIA =$ राष्ट्रीय आय

- **प्रचलित कीमतों पर राष्ट्रीय आय :** यह देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में उत्पादित किए गए अंतिम उत्पाद का प्रचलित मूल्य होता है।

- **स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय :** इसे वास्तविक आय भी कहा जाता है। यह किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के स्थिर मूल्यों का योग होता है।

- **वर्धित मूल्य (मूल्यवृद्धि) :** किसी उत्पादन इकाई द्वारा निश्चित समय में किए गए उत्पादन के मूल्य तथा प्रयुक्त मध्यवर्ती उपभोग के मूल्य का अंतर वर्धित मूल्य कहलाता है।

- **दोहरी गणना के समाधान हेतु उपाय :**

  (अ) अंतिम उत्पाद विधि का प्रयोग

  (ब) वर्द्धित मूल्य वृद्धि

राष्ट्रीय आय आंकलन की विधियां

- आय विधि
- व्यय विधि
- उत्पादन विधि

राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

उत्पादन विधि	आय विधि	व्यय विधि
कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि	कारक भुगतानों का जोड़	अंतिम व्यय का जोड़
प्राथमिक क्षेत्र द्वारा मूल्य वृद्धि + द्वितीयक क्षेत्र द्वारा मूल्य वृद्धि + तृतीयक क्षेत्र द्वारा मूल्य वृद्धि + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय	कर्मचारियों का पारिश्रमिक + किराया+ब्याज+लाभ + मिश्रित आय + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय	निजी अंतिम उपभोग व्यय +सार्वजनिक अंतिम उपभोग व्यय + सकल देशीय पूंजी निर्माण + निवल निर्यात – निवल अप्रत्यक्ष कर + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय – मूल्यह्रास

- **निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (NDI) :** इसे बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (NNP_{MP}) तथा शेष विश्व से प्राप्त निबल चालू हस्तांतरण के योग से प्राप्त किया जाता है।

NDI = NNP_{MP} + शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण

= राष्ट्रीय आय + निवल अप्रत्यक्ष कर + शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण

- **सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Gross NDI)**

  GNP_{MP} + शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण

- **निवल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (Net NDI)**

  = NNP_{MP} + शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण

  सकल NDI – मूल्य ह्रास

  = GNP_{MP} + शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण – मूल्यह्रास

एक क्षेत्र या एक फर्म की मूल्य वृद्धि की अवधारणा

1. उत्पादन का मूल्य : बिक्री + स्टाक में परिवर्तन (अंतिम स्टॉक-प्रारंभिक)
2. बाजार लागत पर सकल मूल्य वृद्धि (GVA_{MP}) : उत्पादन का मूल्य (–) मध्यवर्ती उपभोग
3. बाजार लागत पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA_{MP}) : GVA_{MP} (–) घिसावट
4. कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA_{FC}) : NVA_{MP} (–) निवल अप्रत्यक्षकर

नोट : सभी क्षेत्रों की कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि जोड़ने से कारक लागत पर देशीय उत्पाद (NDP_{FC}) प्राप्त होता है।

अंतिम व्यय के घटक (GDP_{MP})

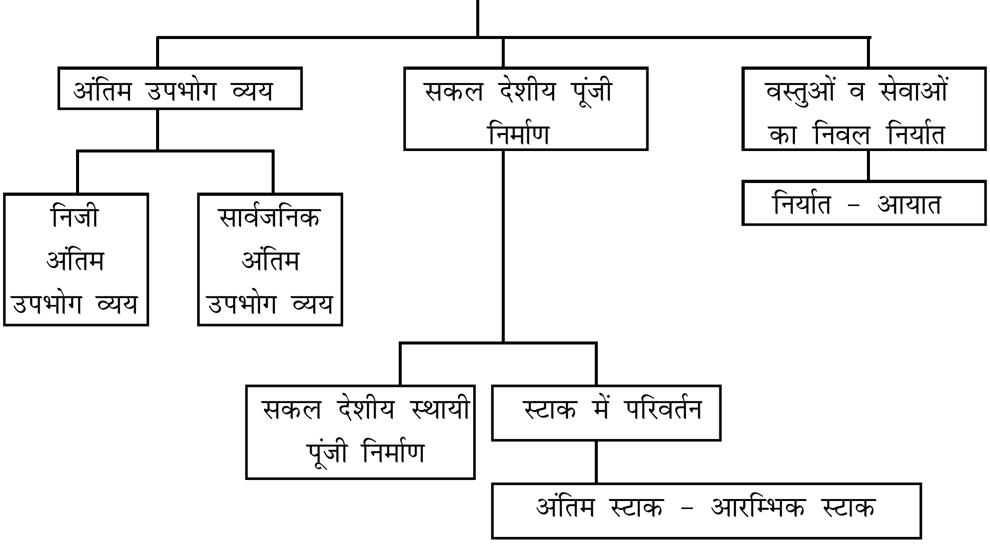

आय विधि से राष्ट्रीय आय के घटक (NNP_{FC})

- कर्मचारियों का पारिश्रमिक
- प्रचालन अधिशेष किराया+ब्याज+लाभ
- स्वनियोजितों की मिश्रित आय
- विदेशों से निवल कारक आय

- ❑ **निजि आय :** निजि क्षेत्र द्वारा देश-विदेश के सभी स्त्रोतो से अनुमानित कारक आय व अतंरण आय का योग, निजि आय कहलाती है।
- ❑ **वैयक्तिक आय :** व्यक्तियों या गृहस्थों को वास्तविक रूप से सभी स्त्रोतो से प्राप्त साधन आय व अंतरण आय का योग वैयक्तिक आय कहलाती है।
- ❑ **वैयक्तिक प्रयोज्य आय :** यह वैयक्तिक आय का वह भाग है जो गृहस्थों को इच्छानुसार प्रयोग करने के लिए उपलब्ध है।
- ❑ **वैयाक्तिक प्रयोज्य आय से राष्ट्रीय आय की गणना।**

वैयक्तिक उपभोग + वैयाक्तिक बचते अथवा वैयक्तिक प्रयोज्य आय (P. D. I.)

\+ प्रत्यक्ष वैयक्तिक कर
\+ गृहस्थों द्वारा फीस तथा जुर्माना का भुगतान

वैयक्तिक आय

\+ निगम कर
\+ अवितरित लाभ

निजी आय

\- विदेशों से अर्जित शुद्ध आय
\- राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
\- सरकार से चालू अंतरण
\- विदेशों से चालू अंतरण

निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से आय

\- सरकारी प्रशासनिक विभागों को संपति व उद्यमशीलता से प्राप्त आय
\- गैर विभागीय उद्यमों की बचतें
\- विदेशों से अर्जित शुद्ध आय

घरेलू आय (NDP_{FC})

\+ NFIA

राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

❑ **देशीय आय से वैयक्तिक प्रयोज्य आय**

देशीय आय (NDP_{FC})

+ NFIA

राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

– सरकारी प्रशासनिक विभागों को संपत्ति व उद्यमशीलता से आय
– गैर विभागीय उद्यमों की बचतें
– विदेशों से अर्जित निवल कारक आय

निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से आय

+ विदेशों से अर्जित निवल कारक आय
+ राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
+ सरकार से चालू अंतरण
+ विदेशों से चालू अंतरण

निजी आय

+ निगम कर
+ अवितरित लाभ

वैयक्तिक आय

– प्रत्यक्ष वैयक्तिक कर
– गृहस्थों द्वारा फीस तथा जुर्माना भुगतान

वैयक्तिक प्रयोज्य आय (P. D. I.)
वैयक्तिक उपभोग व्यय + वैयक्तिक बचत

1 अंक वाले लघुउत्तरीय प्रश्न

1. निवल निर्यात से क्या अभिप्राय है?
2. चालू हस्तांतरण को परिभाषित कीजिए?
3. किसी देश का सामान्य निवासी किसे माना जाता है?
4. NDP_{MP} किस स्थिति में NPP_{FC} से कम होती है?
5. स्थिर पूंजी के उपभोग का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
6. एक उदाहरण की सहायता से आय के प्रवाह में भरण का अर्थ स्पष्ट कीजिए?
7. आय के प्रवाह में क्षरण से क्या अभिप्राय है?

8. निम्नलिखित को स्टाक व प्रवाह में वर्गीकृत कीजिए?

(अ) हानि (ब) पूंजी

(स) उत्पादन (द) धन

9. मौद्रिक GNP को परिभाषित कीजिए?

10. वास्तविक GNP से आप क्या समझते हो?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

11. $\mathbf{NVA_{FC}}$ तथा $\mathbf{NVA_{MP}}$ में कौन कारक आय के योग के समान होता है?

12. शेयरों की बिक्री से प्राप्त राशि को देशीय कारक आय में शामिल क्यो नही किया जाता?

13. अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादकों द्वारा की गई निवल मूल्य वृद्धि को जोड़ने पर क्या प्राप्त होता है?

14. मूल्य वृद्धि विधि किस प्रकार दोहरी गणना की समस्या का समाधान करती है?

15. प्रति व्यक्ति वास्तविक **GDP** क्या है?

16. निम्न समाहरों को पूरा कीजिए -

(अ) राष्ट्रीय आय : देशीय आय ....

(ब) वैयक्तिक आय : निजि आय ....

(स) कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि : सकल उत्पाद ....

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. वास्तविक तथा मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद में अंतर कीजिए।

2. वस्तुओं को मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं में वर्गीकरण का आधार क्या है? उचित उदाहरण दीजिए?

3. उपभोग वस्तुएं तथा पूंजीगत वस्तुओं में अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. सकल देशीय उत्पाद का वितरण किस प्रकार आर्थिक कल्याण के मापन में बाधा है समझाइए।

5. किसी देश की देशीय सीमा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

6. कारक आय तथा हस्तांतरण आय के बीच अंतर कीजिए।

7. निम्न को स्टाक व प्रवाह में वर्गीकृति कीजिए :

(अ) भारत की जनसंख्या

(ब) निर्यात

(स) निवेश

(द) गृहस्थ द्वारा भोजन पर व्यय

(य) राष्ट्रीय पूंजी

(र) बैंक के बचत खातों में जमाएं

8. द्विक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय के चक्रीय प्रवाह को समझाइए।

9. आर्थिक कल्याण से क्या अभिप्राय है? क्या राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है?

10. निम्नलिखित को मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए। कारण भी दीजिए।

(अ) डीलर द्वारा मशीन की खरीद।

(ब) गृहस्थों द्वारा कार की खरीद।

11. स्टाक एवं प्रवाह में अंतर लिखिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

12. एक सामान्य निवासी से क्या अभिप्राय है? निम्नलिखित में से स्पष्ट कीजिए कि किसे भारत का सामान्य निवासी माना जाएगा?

(अ) भारत में स्थित विश्व स्वास्थय संगठन के आफिस में कार्यरत एक अमेरिकी।

(ब) अमरीकी दूतावास जो कि भारत में स्थित है, उसमें कार्यरत भारतीय।

13. एक भारतीय के लिए निम्न में से कौन सी विदेशों से प्राप्त कारक आय है तथा क्यों?

(अ) भारतीय निवासी द्वारा अमेरिका की कंपनी में खरीदे हुए बांडस से प्राप्त ब्याज से आय।

(ब) विदेश में स्थित भारतीय द्वारा अपने परिवार को भेजी गई राशि।

14. सकल देशीय उत्पाद को कल्याण के सूचक के रूप में प्रयोग करने में बाहरी प्रभावों के कारण वह क्यों उपयुक्त नही माना जा सकता।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

14. बाजार कीमत पर देशीय उत्पाद को कारक लागत पर देशीय उत्पाद में बदलने के लिए आर्थिक सहायता को जोड़ा जाता है तथा निवल अप्रत्यक्ष कर को घटाया जाता है क्यो?

15. आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय के आंकलन में निम्न की गणना किस प्रकार की जाएगी? कारण भी लिखिए।

    (अ) एक व्यक्ति द्वारा कार ऋण के ब्याज का भुगतान।

    (ब) सरकार द्वारा अधिशाषित कंपनी द्वारा कार ऋण के ब्याज का भुगतान।

16. स्वउपभोग के लिए उत्पाद की गणना करते समय हम वस्तुओं के आरोपित मूल्य को सम्मिलित करते हैं लेकिन सेवाओं को नही करते क्यों? वर्णन कीजिए।

17. प्रचालन अधिशेष किसे कहते है? इसके घटकों के नाम लिखिए।

18. देशीय उत्पाद तथा राष्ट्रीय उत्पाद में अंतर लिखिए। देशीय उत्पाद कब राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक हो सकता है?

6. अंको वाले प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न को किस प्रकार व्यवहार में लाया जाता है?

    (1) एक भारतीय द्वारा विदेशी कंपनी के शेयरों में निवेश से प्राप्त लाभांश।

    (2) एक भारतीय परिवार द्वारा विदेशो में बसे अपने संबंधियों से प्राप्त राशि।

    (3) दोस्त को कार के लिए दिए गए ऋण से प्राप्त ब्याज।

2. कारण बताते हुए समझाइए कि राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न लिखित के साथ क्या व्यवहार किया जाता है?

    (1) एक विदेशी द्वारा भारतीय कंपनी के शेयरों में निवेश से प्राप्त लाभांश।

    (2) कनाडा में स्थित भारतीय बैंक की शाखा द्वारा अर्जित लाभ।

    (3) भारत में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों को एक विदेशी कंपनी द्वारा दी गई छात्रवृत्तियाँ।

3. राष्ट्रीय आय की गणना करते समय दोहरी गणना की समस्या का एक उदाहरण की सहायता से व्याख्या कीजिए। इस समस्या से किस प्रकार बचा जा सकता है?

4. वास्तविक सकल देशीय उत्पाद तथा मौद्रिक सकल देशीय उत्पाद में अंतर समझाइए। क्या सकल

देशीय उत्पाद को कल्याण के सूचक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है? दो कारण लिखिए।

5. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न गणना किस प्रकार की जाएगी कारण भी दीजिए।

(1) कम्पनी के शेयर धारकों द्वारा प्राप्त बोनस शेयरों का मूल्य।

(2) विद्यार्थियों से प्राप्त शुल्क।

(3) भारत में स्थित विदेशी कंपनी को दिए गए ऋण से प्राप्त ब्याज।

6. आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के विभिन्न चरणों की व्याख्या कीजिए।

7. एक उचित उदाहरण की सहायता से मूल्य वृद्धि विधि द्वारा राष्ट्रीय आय ज्ञात करने के चरण समझाइए।

8. कारण बताते हुए निम्न को कारक आय तथा हस्तांतरण आय में वर्गीकृत कीजिए।

(अ) बाढ़ पीड़ितो को दी गई वित्तीय सहायता।

(ब) वृद्धावस्था पेशन

(स) आरोपित किराया

9. निजि आय ज्ञात कीजिए

	(करोड़)
(1) राष्ट्रीय ऋणों पर व्यय	10
(2) वैयक्तिक प्रयोज्य आय	150
(3) निगम लाभ कर	25
(4) वैयक्तिक कर	50
(5) निजि निगमित क्षेत्रों की बचत	05

10. कारण देते हुए समझाइए कि क्या निम्न को देशीय उत्पाद में सम्मिलित किया जाएगा?

(1) भारत मे स्थित विदेशी बैंक द्वारा अर्जित लाभ

(2) भारत में स्थित विदेशी दूतावास द्वारा उसके कर्मचारियों को दिया गया वेतन।

(3) एक भारतीय द्वारा विदेश में स्थित फर्म से प्राप्त ब्याज।

11. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न के साथ कैसा व्यवहार किया जायेगा अपने उत्तर का कारण भी लिखिए।

(1) मकान की बिक्री से प्राप्त पूंजी लाभ।

(2) लाटरी का इनाम जीतना।

(3) सार्वजनिक ऋणों पर ब्याज।

12. राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाते समय निम्न के साथ क्या व्यवहार किया जाता है? कारण सहित लिखिए।

(1) मकान का आरोपित किराया।

(2) शेयरों से प्राप्त ब्याज।

(3) बाढ़ पीड़ितो द्वारा प्राप्त वित्तीय मदद।

अभ्यास के लिए संख्यात्मक प्रश्न

1. कारक लागत पर सकल देशीय उत्पाद तथा (ii) निवल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए :-

	(करोड़)
(1) निवल अप्रत्यक्ष कर	130
(2) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	100
(3) लाभ	90
(4) निवल देशीय पूंजी निर्माण	120
(5) स्टॉक मे परिवर्तन	(−)10
(6) निजी अंतिम उपभोग व्यय	500
(7) निवल आयात	20
(8) विदेशों को निवल चालू (पूँजीतर) हस्तांतरण	10
(9) विदेशों को निवल कारक आय	30
(10) सकल घरेलू-पूंजी निर्माण	160

2. निम्न आंकड़ो से (अ) आय विधि तथा (ब) व्यय विधि द्वारा कारक लागत पर (GNP_{FC}) सकल राष्ट्रीय उत्पाद की गणना कीजिए। :-

	(करोड़)
(1) निवल देशीय पूंजी निर्माण	500
(2) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1850
(3) स्थिर पूंजी का उपभोग	100
(4) सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	1100
(5) निजि अंतिम उपभोग व्यय	2600
(6) लगान	400
(7) लाभाँश	200
(8) ब्याज	500
(9) निवल निर्यात	(−) 100

(10) लाभ 1100

(11) विदेशो से निवल कारक आय (–) 50

(12) निवल अप्रत्यक्ष कर 250

(उत्तर : 3900 करोड़ रू.)

3. एक अर्थव्यवस्था में केवल दो उत्पादक क्षेत्र A तथा B है।

(अ) प्रत्येक क्षेत्र की बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि तथा

(ब) राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए

	(करोड़)
(1) विदेशों से निवल कारक आय	20
(2) A की बिक्री	1000
(3) B की बिक्री	2000
(4) B के स्टाक में परिवर्तन	(–) 200
(5) A का अंतिम स्टाक	50
(6) A का प्रारम्भिक स्टाक	100
(7) A तथा B द्वारा स्थिर पूंजी का उपभोग	180
(8) A तथा B द्वारा अप्रत्यक्ष कर का भुगतान	120
(9) A द्वारा कच्चे माल की खरीद	500
(10) A द्वारा कच्चे माल की खरीद	600
(11) B का निर्यात	70

(राष्ट्रीय आय 1370 करोड़ रू.)

4. निम्नलिखित आंकड़ो से (अ) कारक लागत पर (GDP_{FC}) सकल देशीय उत्पाद तथा (ब) विदेशों को कारक आय ज्ञात कीजिए।

	(करोड़)
(1) सकल देशीय पूंजी निर्माण	600
(2) ब्याज	200
(3) बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	2800
(4) लगान	300
(5) कर्मचारियों का परिश्रामिक	1600
(6) लाभ	400
(7) लाभाँश	150
(8) विदेशो से कारक आय	50

(9) स्टाक में परिवर्तन	100
(10) निवल अप्रत्यक्ष कर	240
(11) निवल स्थिर पूंजी निर्माण	400
(12) निवल निर्यात	(-) 30

(उत्तर : GDP_{FC} = 2600 करोड़ (b) FIPA = 90 करोड़)

5. निम्न आंकड़ो से (अ) कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद (**NNP_{FC}**) तथा (ब) सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए?

	(करोड़)
(1) शेष विश्व को निवल चालू अंतरण	10
(2) गैर-विभागीय उद्यमों की बचते	60
(3) निवल अप्रत्यक्ष कर	90
(4) सरकारी प्रशासनिक विभागो को संपत्ति व उद्यमवृत्ति से आय	80
(5) स्थिर संपत्ति का उपभोग	70
(6) वैयक्तिक कर	100
(7) निगम कर	40
(8) राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज	30
(9) सरकार द्वारा चालू अतंरण भुगतान	50
(10) निजि निगमित क्षेत्र की प्रतिधारित आय	10
(11) वैयक्तिक प्रयोज्य आय	1100

(उत्तर : (a) NNP_{FC} = 1320 करोड़ (b) GNDI = 1470 करोड़)

6. निम्न आंकड़ो से (अ) बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (**GDP_{MP}**) तथा (ब) विदेशों से कारक आय ज्ञात कीजिए?

	(करोड़)
(1) लाभ	500
(2) निर्यात	40
(3) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1500
(4) कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	2500
(5) शेष विश्व से निवल चालू अंतरण	90
(6) लगान	300
(7) ब्याज	400
(8) विदेशो को कारक आय	120
(9) निवल अप्रत्यक्ष कर	250
(10) निवल देशीय पूंजी निर्माण	650

(11) सकल स्थिर पूंजी निर्माण		700
(12) स्टाक में परिवर्तन		50

(उत्तर : (a) GDP_{MP} = 3050 करोड़ FIRA = 120 करोड़)

7. निम्न आंकड़ो से (अ) बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (**GDP_{MP}**) तथा (ब) विदेशों से कारक आय की गणना कीजिए?

	(करोड़)
(1) कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	6150
(2) निवल निर्यात	(–) 50
(3) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	3000
(4) लगान	800
(5) ब्याज	900
(6) लाभ	1300
(7) निवल अप्रत्यक्ष कर	300
(8) निवल देशीय पूंजी निर्माण	800
(9) सकल स्थिर पूंजी निर्माण	850
(10) स्टाक में परिवर्तन	50
(11) लाभांश	300
(12) विदेशो को कारक आय	80

(उत्तर : GDP_{MP} = 6400 करोड़ FIFA = 130 करोड़)

8. निम्न आंकड़ो से (अ) निवल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय तथा (ब) वैयक्तिक आय की गणना?

	(करोड़)
(1) वैयक्तिक कर	212
(2) कारक लागत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद	2500
(3) निवल अप्रत्यक्ष कर	180
(4) सरकार द्वारा उपार्जित देशीय उत्पाद	500
(5) निजि निगमों की प्रतिधारित आय	80
(6) विदेशों से निवल कारक आय	23
(7) राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज	100
(8) विदेशों से निवल चालू हस्तांतरण	20
(9) निगम कर	70
(10) सरकार द्वारा चालू अतंरण	30

9. निम्न आंकड़ो से (अ)व्यय विधि तथा (ब) उत्पाद विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना कीजिए?

(करोड़)

(1)	प्राथमिक क्षेत्र द्वारा बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि	300
(2)	निजि अंतिम उपभोग व्यय	750
(3)	स्थिर पूंजी का उपभोग	150
(4)	निवल अप्रत्यक्ष कर	120
(5)	द्वितीयक क्षेत्र द्वारा बाजार कीमत पर सकल मूल्य वृद्धि	200
(6)	निवल देशीय स्थिर पूंजी निर्माण	220
(7)	स्टाक में परिवर्तन	(–) 20
(8)	तृतीयक क्षेत्र द्वारा बाजार कीमत पर सकल वृद्धि	700
(9)	निवल निर्यात	50
(10)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	150
(11)	विदेशों से निवल कारक आय	20

(उत्तर : (a) 950 करोड़ (b) 950 करोड़)

10. निम्नलिखित आंकड़ो द्वारा दिखाइए कि कारक लागत पर निवल मूल्य वृद्धि (NVA_{FC}) कारक आय के योग के बराबर होता है।

		(करोड़)
(1)	देशीय बाजार से कच्चे माल की क्रय तथा दूसरे आगत	600
(2)	स्टाक में वृद्धि	200
(3)	देशीय बिक्री	1800
(4)	कच्चे माल का आयात	100
(5)	निर्यात	200
(6)	स्थिर माल का आयात	75
(7)	वेतन व मजदूरी	600
(8)	ब्याज का भुगतान	450
(9)	लगान	75
(10)	लाभांश	150
(11)	अवितरित लाभ	80
(12)	निगम लाभ कर	20
(13)	अप्रत्यक्ष कर	50

11. निम्नलिखित आंकड़ो से (अ) निजि आय (ब) वैयक्तिक आय तथा (स) वैयक्तिक प्रयोज्य आय की गणना कीजिए।

(1)	सरकारी प्रशासनिक विभागों की संपत्ति व उद्यमवृत्ति से उपार्जित आय	100
(2)	गैर-विभागीय उद्यमों की बचते	80
(3)	देशीय आय से निजि क्षेत्र की कारक आय	500
(4)	निगम कर	30

(5)	निजि निगमित क्षेत्र की बचते	65
(6)	गृहस्थों द्वारा प्रत्यक्ष कर भुगतान	20
(7)	सरकारी प्रशासनिक विभागों से चालू स्थांतरण	10
(8)	शेष विश्व से चालू हस्तांतरण	10
(9)	विदेशों से कारक आय	5
(10)	प्रचालन अधिशेष	150
(11)	विदेशों को कारक आय	15

(उत्तर : (a) 520 करोड़ (b) 425 करोड़ (c) 405 करोड़)

1. अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. निर्यात तथा आयात का अंतर निवल निर्यात कहलाता है।

   निवल निर्यात : निर्यात – आयात

2. चालू हस्तांतरण वे हस्तातंरण है जो भुगतान कर्ता की वर्तमान आय में से प्राप्त कर्त्ता की वर्तमान आय में शामिल किए जाते है।

3. किसी देश का सामान्य निवासी उस व्यक्ति या संस्था को माना जाता है जिसके आर्थिक हित उसी देश से जुड़े हो।

4. जब आर्थिक सहायता, अप्रत्यक्ष कर से अधिक हो।

5. एक लेखा वर्ष में उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग के फलस्वरूप स्थिर पूंजी के मूल्य में आने वाली कमी को स्थिर पूंजी का उपभोग कहते है।

6. भरण उन आर्थिक चरों को कहते हैं जो आय तथा वस्तुओ के प्रवाह में वृद्धि करते है। जैसे निवेश व निर्यात।

7. क्षरण वे आर्थिक चर होते है जो आय के प्रवाह पर ऋणात्मक प्रभाव छोड़ते है। जैसे बचत व आयात।

8. (1) प्रवाह तथा (2) स्टाक (3) प्रवाह (4) स्टॉक

9. मौद्रिक सकल राष्ट्रीय उत्पाद चालू वर्ष के सकल राष्ट्रीय उत्पाद का मौद्रिक मूल्य है जो कि वर्तमान वर्ष के मूल्यों पर आधारित होता है?

10. वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद चालू वर्ष के सकल राष्ट्रीय उत्पाद का वास्तविक मूल्य है जो कि आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होता है।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

11. NAV_{FC}

12. यह ऐसा आर्थिक संव्यवहार है जिसका आय व उत्पादन के प्रवाह पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

13. NDP (निवल देशीय उत्पाद)

14. मूल्य वृद्धि विधि के अंतर्गत मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य घटा दिया जाता है। जिससे दोहरी गणना की संभावना समाप्त हो जाती है।

15. जब प्रति व्यक्ति आय वास्तविक सकल देशीय उत्पाद (आधार वर्ष की कीमतों पर मूल्य) द्वारा ज्ञात की जाती है उसे प्रति व्यक्ति वास्तविक GDP कहते है।

16. (1) राष्ट्रीय आय : देशीय आय + NFIA

    (2) वैयक्तिक आय : निजि आय – निगम कर – अवितरित लाभ

    (3) कारक लागत पर निवल उत्पाद – मध्यवर्ती उपभोग

    – धिसावट – निवल अप्रत्यक्ष कर

संख्यात्मक प्रश्नों के हल

1. कारक लागत पर सकल

   देशीय उत्पाद GDP_{FC}

   VI+II+VII+X-I

   500+100+(-20)+160-130

   760-150=610

   निबल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय

   NNDI

   610-(160-120) -30+130-10 = 740-80 = 660

2. कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद GNP_{FC}

   (a) आय विधि : (ii)+(vi)+(viii)+(x)+(xi)

   NNP_{FC} = 1850+400+500+1100+(-50)

= 3800

GNP_{FC} = 3800+100 = 3900 करोड़

(b) व्यय विधि : (i)+(iii)+(iv)+(v)+(ix)+(xi)-(xii)

= 500+100+1100+2600+(-100)+(-50)-250

= 3900 करोड़

3. GVA_{MP} क्षेत्रक A का

100-50-500=450

GVA_{MP} क्षेत्रक B का

2000-200-600=1200

दोनों क्षेत्रकों के GVA_{MP} का योग

450+1200=1650

NNP_{FC} = 1650-150-120+20 = 1370

4. कारक लागत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{FC})

NDP_{FC} = (v)+(ii)+(iv)+(vi)

= 1600+200+300+400

=2500

GDP_{FC} = NDP_{FC} + CFC

CFC = GDCF- NDCF (NFCF + S)

= 600 -(400+100)=100

GDP_{FC} = 2500+100=2600

विदेशों को कारक आय (FIPA)

GNP_{MP} = GDP_{FC}+NFIA+NIT

2800=2600+NFIA+240

NFIA = -40

NFIA = FIFA - FIPA

-40 = 50 - FIPA

FIPA = 50+40 = 90 करोड़ रू.

5. राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

(xi)+(vi)+(vii)+(x)-(viii)-(ix)+(i)+(ii)+(iv)

= 1100+100+40+10-30-50+10+60+80

=1320 करोड़ रू.

सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय (GNDI)

$= NNP_{FC}$+(iii)+(v)-(i)

= 1320+90+70-10

=1470 करोड़

6. (a) GDP_{MP}

NDP_{FC} = (ii)+(v)+(vi)+(vii)

= 1500+500+300+400

=2700

$GDP_{MP} = NDP_{MP}$ + CFC + NIT

CFC = (GFCF+ S)

= (700+50) - 650

= 100

NIT=250

GDP_{MP} =2700+100+250

= 3050

(b) FIFA विदेशों से कारक आय

$GNP_{FC} = GDP_{MP}$ + NFIA - NIT

2800 = 3050 + NFIA - 250

NFIA = 0

NFIA = FIFA - FIPA

0 = FIFA -120

FIFA = 120 करोड़

7. बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद (GDP_{MP})

NDP_{MP} = (iii)+(iv)+(v)+(vi)

= 3000+800+900+1300=6000

GDP_{MP} = NDP_{FC}+CFC+NIT

CFC = GDCF - NDCF

= (GFCF+   S) - NDCF

= (850+50)-800

= 100

NIT= 300

GDP_{MP} = 6000+100+300 = 6400 करोड़

FIFA

GNP_{FC} = GDP_{MP}+NFIA-NIT

6150 = 6400+NFIA-300

NFIA = 50

NFIA = FIFA-FIPA

50 = FIFA -80

FIFA = 130

8. निवल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय NNDI

= (ii)+(iii)+(viii)

= 2500+180+20

= 2700

वैयक्तिक आय = (ii) - (iv) + (vii) + (viii) + (x) - (ix) - (v)

= 2500-500+100+20+30-70-80

2000 करोड़ रू.

9. राष्ट्रीय आय

व्यय विधि से

= (ii) + (x) + (vi) + (vii) + (ix) - (xi) - (iv)

= 750+150+220+(-20)-50+20-120

= 950 करोड

उत्पादन विधि से

= (i) + (v) + (viii) - (iii) - (iv) + (xi)

= 300+200+700-150-120+20

= 950 करोड

10. NVA_{FC} = (ii)+(iii)+(v)-(i)-(iv)-(vi)-(xiii)

= 200+1800+200−600−100−75−50

= 1375

कारक आय का योग = (vii) + (viii) + (ix) + (x) + (xi) + (xii)

= 600+450+75+150+80+20

= 1375

11. (a) निजी आय – 520 करोड़ रू.

(b) वैयक्तिक आय – 425 करोड़ रू.

(c) वैयक्तिक प्रयोज्य आय – 405 करोड़ रू.

यूनिट 7

मुद्रा और बैकिंग

स्मरणीय बिंदु:

- **मुद्रा :** मुद्रा को ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जो विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार्य हो और इसके साथ ही जो मूल्य मापन एवं संचय कार्य भी करती हो तथा भावी भुगतान के मानक के रूप में भी कार्य करे।
- **वस्तु विनिमय प्रणाली :** यह विनिमय की ऐसी प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का आदान-प्रदान करके सौदे सम्पन्न किए जाते है।
- **वस्तु विनिमय की कठिनाइयाँ**
  1. दोहरे संयोग का अभाव
  2. सामान्य मूल्य मापक का अभाव
  3. भावी भुगतान में कठिनाई
  4. मूल्य संचय में कठिनाई
  5. विभाजन में कठिनाई
- **मुद्रा की पूर्ति :** मुद्रा की पूर्ति से अभिप्राय जनता के पास समय के एक निश्चित बिन्दु पर कुल मुद्रा की मात्रा से है।
- **व्यावसायिक बैंक का अर्थ :** व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो मुद्रा तथा साख में व्यापार करती है। व्यावसायिक बैंक ऋण प्रदान करने के उद्देश्य से जनता से जमाएँ स्वीकार कते हैं।
- **केन्द्रीय बैंक :** एक देश की बैंकिग व वित्तीय प्रणाली में सर्वोच्च संस्था है जो देश के मोद्रिक व बैंकिग ढाँचे का संचालन, नियंत्रण, निर्देशन एवं नियमन करती है।

मुद्रा के कार्य

- मुद्रा के कार्य
  - प्राथमिक कार्य
    - विनिमय का माध्यम
    - मूल्य का मापक
  - गौण कार्य
    - भावी भुगतान का मान
    - मूल्य का भंडार
    - मूल्य का हस्तांतरण

मुद्रा की पूर्ति के माप

- M_1
  - जनता के पास करेंसी
  - केन्द्रीय बैंक की अन्य जमाएं
  - बैंको के पास मांग जमाएं
- M_2
  - M_1
  - डाकघर बचत बैंक में जमा रशियाँ
- M_3
  - M_1
  - बैंक के पास सावधि जमाएं
- M_4
  - M_3
  - डाकघर में समस्त जमा (NSC) के अतिरिक्त

केन्द्रीय बैंक के कार्य

1. नोट निर्गमन का एकाधिकार
2. सरकार का बैंकर
3. बैंको का बैंक तथा निरीक्षक
4. अंतिम ऋणदाता
5. विदेशी विनिमय कोष संरक्षक
6. मुद्रा की पूर्ति एवं साख नियत्रंक

व्यापारिक बैंको द्वारा साख निर्माण/मुद्रा निर्माण

साख निर्माण से तात्पर्य व्यापारिक बैकों की उस शक्ति से है जिसके द्वारा वे प्राथमिक जमाओं का विस्तार करते है।

$K=1/R$: K = साख गुणांक, R = नकद आरक्षित अनुपात

1 अंक वाले प्रश्न

1. मुद्रा को परिभाषित कीजिए
2. वस्तु विनिमय क्या है?
3. मुद्रा की पूर्ति से क्या अभिप्राय है?
4. बैंक दर से क्या अभिप्राय है?
5. मुद्रा के दो प्राथमिक कार्यो के नाम लिखो?
6. साख निर्माण से क्या अभिप्राय है?
7. साख गुणक से क्या अभिप्राय है?
8. केन्द्रीय बैंक के दो कार्य लिखो?
9. नकद निधि अनुपात *(CRR)* क्या होता है?
10. वैधानिक तरलता अनुपात *(LLR)* से क्या अभिप्राय है?
11. मांग जमा से क्या अभिप्राय है?
12. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियंत्रण के दो मुख्य मौद्रिक उपाय लिखिए?
13. मुद्रा मापन के विभिन्न यंत्र क्या है?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

14. ऋण की सीमांत आवश्यकता से क्या अभिप्राय है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. मूल्य की इकाई के रूप में मुद्रा के कार्य की व्याख्या कीजिए।
2. मुद्रा किस प्रकार दोहरे संयोग के अभाव की समस्या का समाधान करती है।
3. 'मूल्य संचय' के रूप मे मुद्रा के कार्य का वर्णन करो।
4. खुले बाजार की प्रक्रियाएं क्या है? साख की उपलब्धता पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?
5. अंतिम ऋणदाता के रूप में केन्द्रीय बैंक के कार्य का वर्णन करो।
6. SLR व CRR में अंतर स्पष्ट करो। ये साख नियन्त्रण में क्या भूमिका निभाते है।

7. सरकार का बैंकर के रूप में केन्द्रीय बैंक के कार्य लिखो।

8. मुद्रा के किन्ही चार कार्यो को लिखिए।

9. मुद्रा के स्थगित भुगतान का मापक कार्य का वर्णन करो।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

10. वैधानिक तरलता का अनुपात क्या है, इसकी दर में वृद्धि का साख निर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है?

11. केन्द्रीय बैंक के कार्यो मुद्रा जारी करना तथा साख का नियत्रंण का वर्णन कीजिए।

12. बैंक दर में वृद्धि के व्यापारिक बैंको द्वारा किये जाने वाले साख निर्माण पर प्रभाव समझाइए।

13. खुले बाजार की क्रियाएं साख निर्माण को कैसे प्रभावित करती है?

6 अंक वाले प्रश्न

1. केन्द्रीय बैंक को परिभाषित कीजिए तथा इसके प्रमुख कार्यो का वर्णन करो।

2. मुद्रा के किन्ही चार कार्यो की व्याख्या कीजिए।

3. वाणिज्यिम बैंक द्वारा साख निर्माण/मुद्रा निर्माण की प्रक्रिया की व्याख्या संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से कीजए।

4. वाणिज्यिक बैंको द्वारा किए जाने वाली साख निर्माण को केन्द्रीय बैंक खुली बाजार (कार्यवाही द्वारा कैसे प्रभावित करता है)?

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. कोई भी वस्तु जो मूल्य के मापन, विनिमय के माध्यम मूल्य के संचय तथा स्थगित भुगतानों के मान के रूप में निसंकोच स्वीकार की जाए।

2. यह विनिमय की ऐसी प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का आदान-प्रदान करके सौदे सम्पन्न किए जाते है।

3. मुद्रा पूर्ति से आशय किसी एक दिए हुए समय में अर्थव्यवस्था में जनता के पास मुद्रा की कुल मात्रा से है।

4. वह दर है जिस पर व्यापारिक बैंक केन्द्रीय बैंक से ऋण लेता है?

5. 1. विनिमय का माध्यम 2. मूल्य का मापक

6. साख निर्माण से तात्पर्य बैंको की मांग जमाओं के विस्तार की शक्ति से है।

7. साख गुणक यह मापता है कि निक्षेपों के कितना गुणा साख निर्माण किया जा सकता है।

साख गुणक = 1/CRR

8. (अ) मुद्रा जारी करना (ब) साख का नियन्त्रण करना

9. प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपने पास जमा राशियों का एक निश्चित अनुपात केन्द्रीय बैंक के पास कानून जमा करना होता है जिसे नकद कोष अनुपात (CRR) कहते है।

10. व्यापारिक बैंको को अपनी कुल संपत्ति का एक निश्चित प्रतिशत तरल रूप में या प्रतिभूतियों के रूप में रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता अनुपात कहते है।

11. मांग जमा ऐसी जमाएँ है जिनका आहरण चैक की सहायता से किया जा सकता है।

12. (अ) बैंक दर नीति

(ब) खुले बाजार की क्रियाएं

13. भारत में मुद्रा पूर्ति के निम्न वैकल्पिक मापों का प्रयोग किया जाता है।

M_1 = C+DD+OD

M2 = M1+ डाकघर बचत बैंक में जमा

M3 = M1+ बैंको के पास शुद्ध सावधि जमाएं

M4 = M3+ डाकघर बचत संगठनों में समस्त जमा राशियाँ (NSC को छोड़कर)

H.O.T.S.

14. व्यापारिक बैंक द्वारा प्रतिभूति की जमानत पर दिए गए ऋण तथा प्रतिभूति के वास्तविक मूल्य के अंतर को ऋण की सीमांत आवश्यकता कहा जाता है।

यूनिट 8

आय और रोजगार का निर्धारण

स्मरणीय बिंदु:

- एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग (AD) कहते है। इसे कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।
- समग्र मांग के मुख्य घटक निम्नलिखित है :,

  (i) उपभोग व्यय (c)

  (ii) निवेश (I)

  (iii) सरकारी व्यय (G)

  (iv) शुद्ध निर्यात (X-M)

  दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में AD = C+I
- एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल पूर्ति समग्र पूर्ति (AS) कहलाती है। समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय उत्पाद या राष्ट्रीय आय कहते है। अर्थात् राष्ट्रीय आय सदैव समग्र पूर्ति के समान होती है।

  AS = C+S
- समग्र पूर्ति देश के राष्ट्रीय आय को प्रदर्शित करती है।

  AS = Y (राष्ट्रीय आय)
- उपभोग फलन आय (Y) और उपभोग (C) के बीच फलनात्मक संबंध को दर्शाता है। C=f(y)

  यहां

  C = उपभोग Y = आय F = फलनात्मक संबंध

  अथवा

  $C = \bar{C} + MPC (Y)$

  $\bar{C}$ = स्वायत्त उपभोग

- उपभोग फलन (उपभोग प्रवृत्ति) दो प्रकार की होती है।

  1. औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC)

  2. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC)

  औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) : औसत उपभोग प्रवृत्ति को समग्र उपभोग तथा समग्र आय के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है।

  APC = उपभोग (C) / आय(Y)

APC के संबंध में महत्वपूर्ण बिन्दु :

(i) APC इकाई से अधिक होता है जब तक उपभोग, राष्ट्रीय आय से अधिक होता है। समता स्तर बिंदु से पहले ACP >1

(ii) APC = 1 समता स्तर बिंदु पर यह इकाई के बराबर होता है जब उपभोग और आय बराबर होता है। C = Y

(iii) आय बढ़ने के कारण APC लगातार घटती है।

(iv) APC कभी भी शून्य नहीं हो सकती, क्योकि आय के शून्य स्तर पर भी स्वायत्त उपभोग होता है।

- **सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) :**

  आय में परिवर्तन तथा उपभोग में परिवर्तन के अनुपात को, सीमांत उपभोग प्रवृत्ति कहते है।

  MPC = उपभोग में परिवर्तन (c) / आय में परिवर्तन (y)

(1) **MPC का मान शून्य तथा एक के बीच में रहता है :** अगर सम्पूर्ण अतिरिक्त आय उपभोग हो जाती है तब c = y अत: MPC = 1।

लेकिन यदि संपूर्ण अतिरिक्त आय की बचत कर ली जाती है तो c = o अत: MPC =0।

- बचत फलन, बचत और आय के फलनात्मक संबंध को दर्शाता है।

S = f (y)
यहां
S = बचत Y = आय F = फलनात्मक संबंध
अथवा
S = S+ MPS (Y)
S = आय के शून्य स्तर पर बचत

- बचत फलन (बचत प्रवृत्ति) दो प्रकार की होती है।

  APS = बचत(S)/आय(Y)

- **औसत बचत प्रवृत्ति (APS) की विशेषताएं :**

  (1) APS कभी भी इकाई या इकाई से अधिक नही हो सकती क्योंकि कभी भी बचत आय के बराबर या आय से अधिक नही हो सकती।

  (2) APS शून्य हो सकती : समता स्तर बिंदु पर जब C=Y है तब S=0।

  (3) APS ऋणात्मक या इकाई से कम हो सकता है। समता स्तर बिंदु से नीचे स्तर पर APS ऋणात्मक हो सकती है। क्योकि अर्थव्यवस्था में अबंचत होती है।

  (4) APS आय के बढ़ने के साथ बढ़ती है।

- **सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) :** आय में परिवर्तन फलस्वरूप बचत में परिवर्तन के अनुपात को सीमांत बचत प्रवृत्ति कहते हैं।

  MPS = बचत में परिवर्तन S /आय में परिवर्तन Y

  # MPC का मान शून्य तथा इकाई (एक) के बीच में रहता है।

  (1) MPS=1 यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय की बचत कर ली जाती है तब S Y

  (2) MPS=0 यदि सम्पूर्ण अतिरिक्त आय, अपभोग कर ली जाती है S O.

  # औसत उपभोग प्रवृत्ति (APC) तथा औसत बचत प्रवृत्ति (APS) में संबंध।

  APC+APS =1 यह सदैव ऐसा ही होता है, क्योंकि आय को या तो उपभोग किया जाता है या फिर आय की बचत की जाती है।

  प्रमाण: y=c+s यह

  दोनों पक्षो का y से भाग देने पर

  = Y/Y =C/Y+S/Y

  = 1= APC+APS

  अथवा APC = I - APS या APS = I - APC इस प्रकार APC तथा APS का योग हमेशा इकाई के बराबर होता है।

  # सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति (MPS) में संबंध।

MPC+MPS = I ऐसा हमेशा होता है, क्योंकि MPC हमेशा सकारात्मक होती है तथा 1 से कम होती है इसलिए MPS भी सकारात्मक तथा 1 से कम होनी चाहिए।

प्रमाण : Y = C+S

= y = c + s

दोनो पक्षों को y से भाग करने पर

y/ y = c/ y + s/ y

= 1= MPC + MPS अथवा

= MPC =1 - MPS अथवा

MPS =1 - MPC

इस प्रकार, MPC तथा MPS का योग हमेशा इकाई के बराबर होता है।

- निवेश का अर्थ है कि नई पूंजीगत सम्पत्तियों जैसे – मशीनें, यंत्र, औजार, माल आदि के क्रय पर व्यय करना। इसका अर्थ अर्थव्यवस्था में पूंजीगत वस्तुओं के स्टॉक में वृद्धि करना है।
- निवेश दो प्रकार का होता है।

  (1) प्रेरित निवेश

  (2) स्वतंत्र अथवा स्वायन्त निवेश
- प्रेरित निवेश : प्रेरित निवेश वह निवेश है जो लाभ कमाने की भावना से प्रेरित होकर किया जाता है। प्रेरित निवेश का आय से सीधा सम्बन्ध होता है।
- **स्वतंत्र (स्वायत्त) निवेश :** स्वायत्त निवेश वह निवेश है जो आय के स्तर से प्रभावित नही होता अर्थात आय निरपेक्ष होता है।
- **निवेश की सीमांत कुशलता :** निवेश की सीमांत कुशलता को निवेश की प्रति इकाई के लगाने से प्राप्त होने वाले लाभ की अपेक्षित दर के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- **नियोजित बचत :** अर्थव्यवस्था में सब गृहस्थों द्वारा एक समय अवधि में आय के निश्चित स्तर पर जितनी बचत करने की योजना अवधि के शुरू में बनाई जाती है उसे नियोजित बचत कहते है।
- **नियोजित निवेश :** अर्थव्यवस्था में फर्मो द्वारा एक समयावधि में आय के निश्चित स्तर पर जितना निवेश करने की योजना अवधि के शुरू में बनाई जाती है उसे नियोजित निवेश कहते है।

- **वास्तविक बचत :** वास्तविक बचत से आशय आय में से बचाकर रखी गई उस राशि से है जिसका आकलन अवधि की समाप्ति पर होता है।

- **वास्तविक निवेश :** किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में किए गए कुल निवेश को वास्तविक निवेश कहा जाता है।

- आय का संतुलन वह आय स्तर है जहां समग्र माँग, उत्पादन के स्तर (समग्र पूर्ति) के बराबर होती है अतः AD = AS या S= I, यह पूर्ण रोजगार की स्थिति में या अल्प रोजगार की स्थिति में हो सकती है।

- **पूर्ण रोजगार :** इससे अभिप्राय अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति से है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जो शारीरिक मानसिक दृष्टि से योग्य है, को प्रचलित मौद्रिक मजदूरी की दर पर रोजगार मिल रहा है तथा व्यक्ति काम करने को तैयार है।

- **ऐच्छिक बेरोजगारी :** अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जब योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी की दर पर कार्य करने को इच्छुक नही होता।

- **अनैच्छिक बेरोजगारी :** अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जहाँ कार्य करने के इच्छुक व योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक है लेकिन उन्हे कार्य नही मिलता।

- अल्प रोजगार वह स्थिति होती है जहाँ कुल मांग पूर्ण रोजगार स्तर पर आवश्यक है कुल पूर्ति से कम हो।

- **निवेश गुणक :** निवेश में वृद्धि के फलस्वरूप, आय में वृद्धि के अनुपात को निवेश गुणक कहते है।

  K = y/ I या गुणक : आय में परिवर्तन/निवेश में परिवर्तन

  गुणक (K) इस प्रकार निवेश में परिवर्तन और परिणामस्वरूप आय में परिवर्तन के बीच अनुपात है।

- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से अधिक हो जाए तो उसे अत्याधिक मांग कहते है।

- जब समग्र मांग (AD), पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से कम होती है उसे अभावी मांग कहते है।

- स्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग के आधिक्य का माप है।

- अवस्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग में कमी का माप है।

एक अंक वाले प्रश्न

1. समग्र मांग को परिभाषित कीजिए।
2. समग्र पूर्ति को परिभाषित कीजिए।
3. वास्तविक निवेश का अर्थ लिखिए।
4. औसत उपभोग प्रवृत्ति से क्या अभिप्राय है?
5. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति की परिभाषा दीजिए।
6. स्वचालित उपभोग क्या है?
7. प्रत्याशित समस्त मांग से क्या अभिप्राय है?
8. क्या औसत उपभोग प्रवृत्ति का मान इकाई से अधिक हो सकता है?
9. क्या औसत उपभोग प्रवृत्ति शून्य हो सकती है?
10. औसत उपभोग प्रवृत्ति तथा औसत बचत प्रवृत्ति में क्या संबंध है?
11. यदि APS=0.6 है तो APC का मान क्या होगा?
12. प्रत्याशित बचत से क्या अभिप्राय है?
13. यदि MPC तथा MPS का मान बराबर है तो गुणक का मान क्या होगा?
14. निवेश गुणक का न्यूनतम मान क्या हो सकता है?
15. निवेश गुणक का अधिकतम मान क्या हो सकता है?
16. क्या औसत उपभोग प्रवृत्ति ऋणात्मक हो सकती है?
17. निवेश गुणक से क्या अभिप्राय है?
18. नकद आरक्षित अनुपात में वृद्धि, समग्र मांग को किस प्रकार प्रभावित करती है?
19. निवेश क्या है?
20. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य इकाई से अधिक क्यो नही हो सकता?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

21. अभावी मांग का उत्पादन तथा रोजगार पर क्या प्रभाव पड़ता है?
22. स्फीती अंतराल से क्या अभिप्राय है?

23. किस परिस्थिति में उपभोग फलन को सीधी रेखा के रूप में प्रदर्शित किया जाता है?

24. आय में निरंतर वृद्धि का औसत उपभोग प्रवृत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

25. जब MPC = ½ है तथा 100 करोड़ रू के अतिरिक्त निवेश में अर्थव्यवस्था में कितनी अतिरिक्त आय का सृजन होगा?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. समग्र मांग को परिभाषित कीजिए तथा इसके घटकों के बारे में लिखिए।

2. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से औसत उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमांत उपभोग प्रवृत्ति में अंतर स्पष्ट कीजिए?

3. बचत तथा निवेश हमेशा बराबर होते है। व्याख्या कीजिए।

4. निवेश गुणक क्या है? सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति एवं निवेश गुणक के बीच संबंध का वर्णन कीजिए।

5. उत्पादन रोजगार तथा कीमत पर अत्याधिक मांग के प्रभाव की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

6. स्फीति अंतराल का अर्थ एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

7. एक रेखा चित्र की सहायता से अर्थव्यवस्था में न्यून (अभावी) मांग की स्थिति की व्याख्या कीजिए।

8. कोई तीन उपायों का संक्षेप में वर्णन करें जिनके द्वारा अर्थव्यवस्था में अत्याधिक मांग को नियन्त्रित किया जा सकता है।

9. निम्नलिखित कथन सही है या गलत कारण सहित लिखिए?

   (1) निवेश गुणक जब 1 होता है तो सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का मूल्य शून्य होता है।

   (2) औसत बचत प्रवृत्ति का मूल्य कभी भी शून्य से कम नही हो सकता।

10. कारण सहित बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है या आत्मा

   (1) जब सीमांत उपभोग प्रवृत्ति शून्य होती है तो गुणक का मूल्य भी शून्य होता है।

   (2) औसत बचत प्रवृत्ति का मूल्य कभी भी 1 से अधिक नही हो सकता।

11. मौद्रिक नीति क्या है? किसी अर्थव्यवस्था में साख की उपलब्धता को प्रभावित करने में (1) बैंक दर (2) सीमांत आवश्यकताओं की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

12. अत्याधिक मांग क्या है? अत्याधिक मांग को नियंत्रित करने के लिए किन्ही दो राजकोषीय उपायों की व्याख्या कीजिए?

13. राजकोषीय नीति क्या है? किसी अर्थव्यवस्था में न्यून (अभावी) मांग में सुधार लाने के लिए राजकोषीय नीति उपायों की व्याख्या कीजिए?

14. पूर्ण रोजगार संतुलन की धारणा को एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

15. प्रेरित निवेश तथा स्वतंत्र (स्वायत्त) निवेश में अंतर स्पष्ट कीजिए।

16. उपयोग फलन की व्याख्या कीजिए।

17. संक्षेप में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति के सम्बन्धों की व्याख्या कीजिए।

18. यदि राष्ट्रीय आय 50 करोड़ रू० और बचत 5 करोड़ रू. हो तो औसत उपभोग प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए। जब आय बढ़कर 60 करोड़ रू० तथा बचत बढ़कर 9 करोड़ रू० हो जाए तो औसत बचत प्रवृत्ति तथा सीमांत बचत प्रवृत्ति ज्ञात कीजिए।

19. एक अर्थव्यवस्था संतुलन में है। इसकी राष्ट्रीय आय 5000 रू और स्वतंत्र उपभोग व्यय 500 रू० है यदि सीमान्त उपभोग प्रवृत्ति 0.7 हो तो कुल उपभोग व्यय कितना होगा?

20. **निम्नतालिका पूरी कीजिए :-**

आय का स्तर	बचत	सीमांत उपभोग प्रवृत्ति	APC	APS
0	- 80	-	-	-
100	-	0.7	-	-
200	-	0.7	-	-
300	-	0.7	-	-

21. यदि सीमांत बचत प्रवृत्ति 0.8 हो तो निवेश में 125 करोड़ रू. की वृद्धि राष्ट्रीय आय में कितनी वृद्धि लाएगी? परिकलन कीजिए।

22. आय का संतुलन स्तर ज्ञात कीजिए जब निवेश 60 रू. है तथा $S = -40 + 0.25y$

23. क्या बेरोजगारी की स्थिति में एक अर्थव्यवस्था में संतुलन हो सकता है? व्याख्या कीजिए।

24. बैंक दर में परिवर्तन करके अत्याधिक मांग तथा न्यून (अभावी) मांग को किस प्रकार नियंत्रित किया जा सकता है? संक्षेप में व्याख्या कीजिए?

25. एक रेखाचित्र की सहायता से बचत तथा आय के संबंधो की संक्षिप्त रूप में व्याख्या कीजिए।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

28. दिए गए उपभोग फलन $C = 1000 + 0.6\,Y$ के आधार पर बचत फलन ज्ञात कीजिए।

29. एक द्विक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में बचत तथा निवेश फलन निम्न प्रकार है

S= -10+0.2y

I= -3+0.1y

आय का संतुलन स्तर ज्ञात कीजिए।

(6 अंक वाले प्रश्न)

1. आय तथा उत्पादन के संतुलन स्तर पर समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति क्यो बराबर होनी चाहिए? एक रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

2. बचत तथा निवेश वक्रों की सहायता से आय के संतुलन स्तर की व्याख्या कीजिए। यदि बचत नियोजित निवेश से अधिक हो जाए तो कैसे परिवर्तन इनमें समानता स्थापित करेंगे?

3. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निवेश गुणक की प्रक्रिया की व्याख्या कीजिए।

4. नियोजित निवेश के नियोजित बचत से अधिक होने का आय तथा रोजगार पर क्या प्रभाव पड़ेगा? रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

5. राजकोषीय नीति से क्या तात्पर्य है? यह अत्यधिक मांग को नियंत्रित करने में किस प्रकार सहायता करती है?

6. क्या अल्परोजगार की अवस्था में संतुलन हो सकता है? एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए?

7. सरकार की मौद्रिक नीति के मात्रात्मक तथा गुणात्मक उपाय अभावी मांग को कैसे नियंत्रित करते है?

8. स्फीति अंतराल तथा अवस्फीति अंतराल में अंतर बताओ। अवस्फीति अंतराल को रेखाचित्र द्वारा दिखाइए। क्या यह अंतराल आप के संतुलन स्तर पर पाया जाता है? व्याख्या कीजिए।

9. एक अर्थव्यवस्था में बचत फलन S=-50+0.5Y है (जहां S= बचत और Y= राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 700 है। इससे निम्नलिखित का परिकलन कीजिए :

   (1) राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर।

   (2) राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर पर उपयोग व्यय

10. C=100+0.75Y एक उपभोग फलन है। (जहां C = उपभोग व्यय तथा Y= राष्ट्रीय आय) और निवेश व्यय 800 है। इस सूचना के आधार पर निम्नलिखित का परिकलन कीजिए:

   (1) राष्ट्रीय आय का संतुलित स्तर

(2) राष्ट्रीय आय के संतुलित स्तर पर बचत।

11. एक अर्थव्यवस्था में निम्न उपभोग फलन दिया गया है :

$C=100+0.5Y$

एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से दिखाइए कि इस अर्थव्यवस्था में जब आय वृद्धि होती है तो APC में कमी आती है।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल)

12. एक अर्थव्यवस्था के लिए बचत की सीधी रेखा खीचिए। इस रेखा से उपभोग वक्र की व्युपत्ति कीजिए एवं व्युत्पन्न की पद्धति का वर्णन कीजिए। यह दर्शाइए कि उपभोग वक्र के ऊपर किसी एक बिंदु पर औसत उपभोग प्रवृत्ति एक होती है

13. निवेश में वृद्धि एक अर्थव्यवस्था में आय के स्तर को किस प्रकार प्रभावित करेगी। एक उदाहरण तथा रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

14. एक रेखाचित्र की सहायता से अल्प (अपूर्ण) रोजगार की धारणा को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। निवेश में वृद्धि पूर्ण रोजगार संतुलन को प्राप्त करने में कैसे सहायता करती है?

15. समष्टि अर्थशास्त्र में अभावी मांग का क्या अर्थ है? इसे रेखाचित्र के द्वारा दर्शाइए? खुले बाजार की क्रियाएं इस समस्या के समाधान में क्या भूमिका निभाती है।

16. उन चरणो की व्याख्या कीजिए जिनके द्वारा उपभोग वक्र से बचत वक्र प्राप्त किया जा सकता है।

एक अंक वाले प्रश्नो के उत्तर

1. किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग कहते है। इसे कुल व्यय के रूप में मापा जाता है।

2. एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल पूर्ति समग्र पूर्ति कहलाती है। समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय उत्पाद या राष्ट्री आय कहते है।

3. किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में किए गए कुल अंतिम निवेश को वास्तविक निवेश कहा जाता है

4. औसत उपभोग प्रवृत्ति कुल उपभोग व्यय तथा कुल आय के बीच का अनुपात है

$APC = c/y$

5. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति आय में परिवर्तन के फलस्वरूप उपभोग में परिवर्तन के अनुपात को व्यक्त करती है।

MPC = c/ y

6. आय के शून्य स्तर पर उपभोक्ता द्वारा किए जाने वाले निम्नतम उपभोग को स्वचलित (स्वायत्त) उपभोग कहा जाता है।

7. किसी अर्थव्यवस्था में एक वित्तीय वर्ष में वस्तुओं व सेवाओं की कुल अनुमानित मांग को प्रत्याशित समस्त मांग कहा जाता है।

8. हाँ समता स्तर बिंदु से पहले औसत उपभोग प्रवृत्ति इकाई से अधिक होती है।

9. औसत उपभोग प्रवृत्ति कभी भी शून्य नही हो सकती क्योकि आय के किसी भी स्तर पर उपभोग शून्य नही हो सकता।

10. APC+APS = 1

11. APC = 1-APS = 1-0.6=0.4

12. किसी अर्थव्यवस्था में आप के विभिन्न स्तरों पर गृहस्थो द्वारा की जाने वाली अनुमानित बचत को प्रत्याशित बचत कहा जाता है।

13. हम जानते है

MPS+MPC = 1

MPS = MPC

MPS+MPS = 1 K=1/MPS

MPS = 1/2, K=2

14. K का न्यूनतम मान 1 होता है जब MPC = O

15. K का अधिकतम मान अनन्त होता है जब MPC = 1

16. नही क्योंकि आप के शून्य स्तर पर भी उपभोग शून्य नही होता।

17. निवेश में होने वाले परिवर्तन तथा आय में होने वाले परिवर्तन के अनुपात को निवेश गुणक कहते है।

18. समग्र मांग कम हो जाएगी।

19. पूंजी स्टॉक में वृद्धि को निवेश कहते है?

20. वह इसलिए कि उपभोग में परिवर्तन, आय में परिवर्तन से अधिक नही हो सकता।

21. समग्र मांग में कमी के कारण उत्पादन तथा रोजगार में कमी होगी।

22. स्फीति अंतराल वह स्थिति है जिसमें कुल मांग मात्रा पूर्ण रोजगार के स्तर पर आवश्यक कुल पूर्ति से अधिक होती है।

23. जब सीमांत उपभोग प्रवृत्ति स्थिर होती है।

24. औसत उपभोग प्रवृत्ति में कमी आती है।

25. $K = 1/1\text{-}MPC = 1/1\text{-}½ = 1/0.5 = 2$

$y = K \times I$

$y = 2 \times 100$

y = 200 करोड़ रू.

यूनिट 9

सरकारी बजट तथा अर्थव्यवस्था

स्मरणीय बिंदुः

- **बजट :** यह आगामी वित्त वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों एवं अनुमानित व्ययों का वित्तीय विवरण है
- **बजट के मुख्य उद्देश्य**

  1. संसाधनों का पुनः वितरण
  2. आय व धन का पुनः वितरण
  3. आर्थिक स्थिरता
  4. सार्वजनिक उद्यमों का प्रबन्ध

- **बजट के घटक**

  (क) राजस्व बजट

  (ख) पूँजीगत बजट

- राजस्व बजट सरकार की राजस्व प्राप्तियों तथा राजस्व व्ययों का विवरण है।
- पूँजीगत बजट सरकार की पूंजीगत प्राप्तियो तथा व्ययों का विवरण है।

बजट प्राप्तियां

- राजस्व प्राप्तियां
  - कर
    - प्रत्यक्ष
    - अप्रत्यक्ष
  - गैर कर राजस्व
    - व्यावसायिक राजस्व
    - ब्याज प्राप्तियाँ
    - लाभ और लाभांश
    - विदेशी सहायता अनुदान
    - फीस
    - लाइसेंस
    - फीस जुर्माना
- पूंजीगत प्राप्तियाँ
  - उधार एवं अन्य देयता
  - ऋणो की वसूली
  - अन्य प्राप्तियां
  - (विनिवेश)

❑ **राजस्व प्राप्तियाँ**

1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों को कम नही करती
2. ये सरकार के दायित्वों में वृद्धि नही करती है

❑ **पूंजीगत प्राप्तियां**

1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों कम कर देती है।
2. ये सरकार के दायित्वों में वृद्धि करती है।

बजट व्यय

- राजस्व व्यय
- पूंजीगत व्यय

❑ **राजस्व व्यय**

1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों में वृद्धि नही करते।
2. ये सरकार के दायित्वों में कोई कमी नही करते।

❑ **पूंजीगत व्यय**

1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों में वृद्धि करते है।
2. ये सरकार के दायित्वों में कमी करते है।

- राजस्व घाटा : कुल राजस्व व्यय – कुल राजस्व प्राप्तियाँ
- राजस्व घाटा : जब सरकार के कुल राजस्व व्यय उसकी कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हों।
- **राजस्व घाटे के प्रभाव**

  1. यह सरकार की भावी देनदारियों में वृद्धि करता है।
  2. यह सरकार के अनावश्यक व्ययों की जानकारी देता है
  3. यह करों के बोझ को बढ़ाता है।
- राजकोषीय घाटा : बजट व्यय > उधार के बिना बजट प्राप्तियाँ।
- राजकोषीय घाटा : कुल व्यय की उधार रहित प्राप्तियों पर अधिकता।
- राजकोषीय घाटे के प्रभाव

  1. यह मुद्रा स्फीति को बढ़ाता है।

  2. देश ऋण-जाल में फंस जाता है।

  3. यह देश के भावी विकास तथा प्रगति को कम करता है।
- प्राथमिक घाटा : राजकोषीय घाटा – ब्याज अदायगियाँ

  प्राथमिक घाटा : राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदागियों को घटाने से प्रथामिक घाटे का पता चलता है।
- प्राथमिक घाटे के प्रभाव

  1. इससे पता चलता है कि भूतपूर्व नीतियों का भावी पीढ़ी पर क्या भार पड़ेगा।

  2. शून्य या निम्न प्राथमिक घाटे से अभिप्राय है कि सरकार पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने के लिए उधार लेने को मजबूर है।

  3. यह ब्याज अदायगियों रहित राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लिए सरकार की उधार जरूरतों को दर्शाता है।
- बजटीय घाटा : बजट व्यय > बजट प्राप्तियां

  बजटीय घाटा : जब सरकार का कुल बजट व्यय, कुल बजट प्राप्तियों से अधिक होता है।

एक अंक वाले प्रश्न

1. बजट को परिभाषित कीजिए।
2. करेत्तर प्राप्तियों से क्या अभिप्राय है।
3. राजस्व प्राप्तियों से क्या अभिप्राय है?
4. पूँजीगत प्राप्तियां किन्हे कहते है?
5. गैर कर प्राप्तियों के दो उदाहरण दीजिए?
6. पूँजीगत प्राप्तियों के दो स्त्रोत बताइए?
7. राजस्व घाटे से क्या अभिप्राय है?
8. राजकोषीय घाटा क्या होता है?
9. ऋण की वापसी (अदायगी) को पूंजीगत व्यय क्यो माना जाता है?
10. ऋणों की वसूली को पूंजीगत प्राप्ति क्यो माना जाता है?
11. संतुलित बजट क्या है?
12. पूंजीगत व्यय को परिभाषित कीजिए?
13. एक सरकारी बजट में प्राथमिक घाटा 25,000 करोड़ रू. है तथा ब्याज भुगतान 15,000 करोड़ रू. है। राजकोषीय घाटे की गणना कीजिए?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) 1 अंक वाले प्रश्न

14. बजटीय प्राप्तियों से आप क्या समझते हो?
15. एक सरकारी बजट में राजस्व घाटा 8,00,000 करोड़ रू. है तथा उधार 5,000 करोड़ रू है। राजकोषीय घाटा क्या होगा?
16. विनिवेश क्या है?
17. शून्य प्राथमिक घाटे से क्या तात्पर्य है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. सरकारी बजट का संसाधनो का आबंटन (नियतन) उद्देश्य समझाइए?
2. राजस्व बजट तथा पूंजीगत बजट में क्या अंतर है?

3. राजस्व प्राप्त्यों से क्या अभिप्राय है? राजस्व प्राप्तियों के स्रोतों की व्याख्या कीजिए?

4. प्रत्यक्ष कर तथा अप्रत्यक्ष कर में अंतर लिखिए?

5. पूंजीगत प्राप्तियों से आप क्या समझते है? पूंजीगत प्राप्तियों के मुख्य स्रोत क्या है?

6. राजस्व घाटे तथा राजकोषीय घाटे का अर्थ लिखिए। राजकोषीय घाटा क्या दर्शाता है?

7. राजकोषीय घाटा क्या है? इसके क्या प्रभाव पड़ते है?

8. राजस्व व्यय तथा पूंजीगत व्यय में क्या अंतर है प्रत्येक का एक - एक उदाहरण देकर समझाइए?

9. सरकारी बजट के 'आय का पुनवितरण उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।'

10. बजट के आर्थिक स्थिरता उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) 3-4 अंक वाले प्रश्न

11. किन परिस्थितियों में घाटे का बजट अर्थव्यवस्था के लिए अनुकूल होता है?

12. क्या राजकोषीय घाटा अनिवार्य रूप से मुद्रा स्फीति को बढ़ाता है अपने मत के पक्ष में कारण दीजिए।

13. बचत के बजट को मुद्रास्फीति की स्थिति में कैसे प्रयोग किया जा सकता है?

14. कारण देते हुए निम्नलिखित को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों में विभाजित कीजिए?

    (1) मनोरंजन कर

    (2) निगम कर

    (3) उत्पाद शुल्क

    (4) पूंजी लाभ कर

15. सरकारी बजट के बारे में निम्नलिखित आंकड़ो से (क) राजस्व घाटा (ख) राजकोषीय घाटा और (ग) प्राथमिक घाटा ज्ञात कीजिए :

	(रू. अरब)
क) योजनागत पूँजीगत व्यय	120
ख) राजस्व व्यय	100
ग) गैर-योजनागत पूंजीगत व्यय	80

घ) राजस्व प्राप्तियां	70
ड़) उधार छोड़कर पूंजीगत प्राप्तियां	140
च) ब्याज भुगतान	30

16. निम्नलिखित में भेद - कीजिए

(क) पूंजीगत व्यय और राजस्व व्यय

(ख) राजकोषीय घाटा और प्राथमिक घाटा

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. एक वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमति प्राप्तियों एवं व्यय का विवरण बजट कहलाता है।
2. सरकार की करों के अलावा अन्य राजस्व प्राप्तियां करेत्तर प्राप्तियां कहलाती है।
3. वे सरकारी प्राप्तियां जिनमें (1) देनदारियां उत्पन्न नही होती तथा (2) परिसम्पत्तियां कम नहीं होती, राजस्व प्राप्तियां कहलाती है।
4. वे सरकारी प्राप्तियां जिनसे (1) देनदारियां बढ़ती है या (2) परिसम्पत्तियां कम नहीं होती है पूँजीगत प्राप्त्यिां कहलाती है।
5. फीस, ब्याज
6. उधार तथा ऋणों की वसूली
7. जब सरकार के कुल राजस्व व्यय उसकी कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो।
8. राजकोषीय घाटे से अभिप्राय कुल बजट व्यय की उधार रहित प्राप्तियों पर अधिकता से है।
9. क्योंकि इससे दायित्वों में कमी आती है।
10. क्योंकि इससे परिसम्पत्तियों में कमी आती है।
11. उस सरकारी बजट को संतुलित बजट कहा जाता है जिसमें सरकार की अनुमानित प्राप्तियाँ अनुमानित व्यय के बराबर दिखाई गई है।
12. जिस व्यय से (1) परिसम्पत्तियों का निर्माण होता है या (2) देनदारियों में कमी आती है वह पूंजीगत व्यय कहलाता है।
13. राजकोषीय घाटा : प्राथमिक घाटा+ब्याज भुगतान

    : 25000+15000

    40,000 करोड़ रू.

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) 1 अंक वाले प्रश्न

14. बजट प्राप्तियां सरकार की वे अनुमानित प्राप्तियाँ है जो एक वित्तीय वर्ष में विभिन्न स्रोतो से प्राप्त होती है।

15. 5,000 करोड़ रू.

16. विनिवेश का अर्थ है सरकार द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के सभी अथवा अंशत: शेयरों को बेचना।

17. शून्य प्राथमिक घाटे से तात्पर्य है कि सरकार पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने के लिए उधार लेने को मजबूर है।

3-4 अंक वाले प्रश्नों के लिए संकेत

15. (1) अप्रत्यक्ष कर (2) अप्रत्यक्ष कर

(2) प्रत्यक्ष कर (3) प्रत्यक्ष कर

यूनिट 10

भुगतान शेष

स्मरणीय बिंदु:

- भुगतान शेष किसी देश के सामान्य निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसम्पत्तियों के लेन-देन का वार्षिक विवरण होता है।

भुगतान शेष के खाते

चालू खाता

इस खाते में वस्तुओं के निर्यात -आयात सेवाओं और चालू अंतरणो की प्राप्तियों व भुगतान के विवरण दर्ज होते है।

पूंजी खाता

इस खाते में परिसम्पत्तियों जैसे मुद्रा स्टॉक, बंध पत्र आदि अर्थात् किसी अर्थव्यवस्था और शेष विश्व के बीच परिसम्पत्तियों के स्वामित्व का हस्तांतरण शामिल होते है

`

चालू खाते मदें

1. दृश्य मदें (वस्तुओं का आयात-निर्यात)
2. अदृश्य मदें (सेवाओं का व्यापार)
3. एक पक्षीय अंतरण

चालू खाते की मदे संपत्ति तथा दायित्वों पर कोई प्रभाव नही डालती

पूंजी खाते की मदें

1. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
2. ऋण
3. पोर्टफोलियो निवेश
4. बैकिंग पूंजी सौदे

पूंजी खाते की मदें सम्पत्ति व दायित्वों में परिवर्तन लाते है।

- व्यापार संतुलन किसी देश के सामान्य निवासियों और शेष विश्व के बीच दृश्य मदों (वस्तुओं) के आयात तथा निर्यात का अंतर होता है।

- स्वायत्त सौदों से अभिप्राय उन आर्थिक लेन देनों से है जिन्हें लाभ के उद्देश्य से किया जाता है इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते में संतुलन बनाए रखना नही होता। इन्हे रेखा से ऊपर की मदें कहा जाता है।

- समायोजक मदे वे आर्थिक सौदे है जिन्हें किसी देश की सरकार द्वारा भुगतान शेष को संतुलित बनाए रखने के लिए किया जाता है, इनका उद्देश्य भुगतान शेष खाते के असंतुलन को दूर करना होता है इन्हें रेखा के नीचे की मदें भी कहा जाता है।

- एक देश की करैंसी का जिस दर पर दूसरे देश की करेंसी से विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहते है।

स्थिर विनिमय दर के गुण	**स्थिर विनिमय दर के दोष**
1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा	1. अंतर्राष्ट्रीय निधि के स्टॉक की आवश्यकता
2. आर्थिक विकास हेतु दीर्घकालीन निवेश को बढावा	2. भुगतान संतुलन में स्वत: समायोजन का अभाव
3. सट्टे अथवा प्रतिरक्षा की समाप्ति	
4. आंतरिक स्थिरता	

- लोचशील या नम्य विनिमय दर का निर्धारण विदेशी विनिमय की मांग तथा पूर्ति की शक्तियों पर निर्भर करता है विदेशी विनिमय की मांग तथा नम्य विनिमय दर में विपरीत सम्बन्ध होता है। यदि विनिमय दर ऊंची है तो विदेशी विनिमय की मांग कम होगी इसके विपरीत स्थिति में विदेशी विनिमय की मांग अधिक की जाएगी।

- विदेशी विनिमय की मांग के स्रोत

  1. विदेशों में वस्तुएं व सेवाऐं खरीदने के लिये

  2. विदेशों में वित्तीय परिसंपत्तियाँ (जैसे बांड, शेयर) खरीदने के लिए

  3. विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिये

  4. विदेशी में प्रत्यक्ष निवेश (जैसे - दुकान, मकान, फैक्टरी खरीदना) के लिए

  5. विदेशों में जाने वाले पर्यटकों की विदेशी विनिमय की मांग पूरी करने के लिए।

- विदेशी विनिमय की पूर्ति और विदेशी विनिमय दर में प्रत्यक्ष धनात्मक संबंध होता है यदि विदेशी विनिमय दर अधिक है विदेशी विनिमय की पूर्ति अधिक होगी और विपरीत अवस्था में विदेशी विनिमय की पूर्ति कम होगी।

- विदेशी विनिमय की पूर्ति के स्त्रोत

(1) विदेशियों द्वारा घरेलू बाजार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं व सेवाओं) की खरीद

(2) विदेशियों द्वारा प्रत्यक्ष निवेश

(3) विदेशी पर्यटको का हमारे देश में भ्रमण

(4) विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीयों द्वारा भेजा गया धन या प्रेषणाएं

(5) वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात

- नम्य विनिमय दर के गुण

(1) विदेशी मुद्राओं के भंडार की आवश्यकता नहीं

(2) संसाधनों का सर्वोत्तम आबंटन

(3) भुगतान संतुलन खाते में स्वतः समायोजन

(4) व्यापार और पूंजी के आवागमन में आने वाली रूकावटों को दूर करना

- नम्य विनिमय दर के दोष

(1) भविष्य गामी विनिमय दर में अत्याधिक

(2) सट्टेबाजी को बढ़ावा

(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश को हतोत्साहित करना

- देशीय मुद्रा का ह्रास तब होता है जब देशीय मुद्रा इकाईयों में विदेशी मुद्रा की कीमत में वृद्धि हो अर्थात देशी करैंसी की कीमत में गिरावट।
- मुद्रा अधिमूल्यन तब होता है जब देशीय मुद्रा की इकाइयों में विदेशी मुद्रा की कीमत कम हो जाये अर्थात देशीय करैसी की कीमत में विदेशी मुद्रा के रूप में वृद्धि।
- संतुलन नम्य विनिमय दर का निर्धारण उस स्तर पर होगा जहाँ विदेशी विनिमय के लिये मांग और विदेशी विनिमय की पूर्ति बराबर हो जाए।
- प्रबंधित तरणशीलता एक ऐसी प्रणाली है जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय समय पर आवश्यकता के अनुसार दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. व्यापार शेष से क्या अभिप्राय है?
2. भुगतान शेष को परिभाषित कीजिए।
3. व्यापार शेष में घाटा कब होता है?
4. व्यापार शेष में 300 करोड़ रूपये का घाटा है यदि निर्यात का मूल्य 500 करोड़ रूपये है तो आयात का मूल्य क्या होगा?
5. व्यापार शेष खाते की दो मदो के नाम लिखिए?
6. भुगतान संतुलन के पूंजी खाते की दो मदों के नाम लिखिए?
7. दृश्य मदों को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए?
8. अदृश्य मदों से क्या अभिप्राय है?
9. एक पक्षीय अंतरणों से क्या अभिप्राय है।
10. स्वायत्त या स्वप्रेरित संव्यवहार किसे कहते है?
11. वे आर्थिक लेनदेन जो भुगतान शेष को संतुलित करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा किए जाते है उन्हे किस नाम से जाना जाता है।
12. स्थिर विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?
13. नम्य विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?
14. नम्य विनिमय दर का निर्धारण करने वाली शक्तियों के नाम लिखिए?
15. नम्य विनिमय दर के दो गुण लिखो।
16. नम्य विनिमय दर के दो दोष लिखिए।
17. स्थिर विनिमय दर के दो गुण लिखिए।
18. स्थिर विनिमय दर के दो दोष लिखिए।
19. विदेशी विनिमय के मांगवक्र का आकार कैसा होता है?
20. विदेशी विनिमय के पूर्ति वक्र का आकार कैसा होता है?
21. यदि विदेशी विनिमय दर बढ़ जाती है तो निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ता है?
22. यदि विदेशी विनिमय दर कम हो जाती है तो आयात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

23. मुद्रा अवमूल्यन से क्या अभिप्राय है।

24. घरेलू मुद्रा के मूल्यह्रास से क्या अभिप्राय है?

25. मुद्रा का अधिमूल्यन से क्या अभिप्राय है?

H.O.T.S. (उच्च स्तरीय बुद्धि कौशल) 1 अंक वाले प्रश्न

26. किस अवस्था में मुद्रा का अवमूल्यन अर्थव्यवस्था के लिए उचित हो सकता है?

27. किस अवस्था में मुद्रा की तुलना में विदेशी मुद्रा की क्रय शक्ति बढ़ती है?

29. किस मद की सहायता से भुगतान संतुलन को संतुलित किया जा सकता है?

30. क्या भुगतान संतुलन सदैव संतुलित होता है।

3-4 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. व्यापार शेष तथा भुगतान शेष में अंतर लिखिए।

2. भुगतान शेष के चालू एवं पूंजी खाते में अंतर बताइए।

3. भुगतान संतुलन में घाटे की पूर्ति किन स्रोतो से की जाती है?

4. भुगतान शेष खाते में स्वप्रेरित तथा समायोजक मदों में क्या अंतर है?

5. विदेशी विनिमय की मांग के तीन कारण दे।

6. विदेशी विनिमय की पूर्ति के प्रमुख स्रोत लिखिए।

7. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी मांग में संबंध की व्याख्या करें।

8. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी पूर्ति के संबंध की व्याख्या करें।

9. विदेशी विनिमय दर में वृद्धि होने पर विदेशी मुद्रा की मांग में कमी क्यों होती है?

10. विदेशी विनिमय दर में वृद्धि होने पर विदेशी मुद्रा की पूर्ति क्यों बढ़ती है?

11. विनिमय दर में कमी विदेशी विनिमय की मांग में क्यों वृद्धि करती है?

SET-I

Section-A

1. पूर्ति अनुसची से क्या अभिप्राय है?
2. अर्थव्यवस्था को परिभाषित कीजिए।
3. समबन्धित वस्तुएं किन्हें कहा जाता है।
4. कारक के प्रतिफल की किस अवस्था में सीमांत व औसत उत्पाद बराबर होते हैं?
5. समरूप उत्पाद का अर्थ समझाइए।
6. यदि अर्थव्यवस्था में संसाधन दक्षता से कार्य ना कर रहे हों तो उत्पादन संभाव्यता पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है। समझाइए।
7. निम्न स्थितियों में मांग की लोच ज्ञात कीजिए यदि कीमत में 5 प्रतिशत की वृद्धि होने पर

   (क) कुल व्यय 20 प्रतिशत बढ़ जाता है।

   (ख) कुल व्यय 10 प्रतिशत घट जाता है।
8. कुल बंधी लागत व कुल परिवर्ती लागत के बीच उदाहरण की सहायता से अंतर कीजिए।
9. निम्न तालिका की सहायता से AC (औसत लागत) तथा MC (सीमांत लागत) ज्ञात कीजिए यदि दूसरी इकाई की AFC (औसत बंधी लागत) 10 है।

इकाइयां	1	2	3	4
कुल परिवर्ती लागत	40	64	80	144

10. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत ''विक्रेताओं की बड़ी संख्या'' की विशेषता के परिणाम समझाइए।

    अथवा

    पूर्ण प्रतियोगिता में ''बाजार के विषय में पूर्ण ज्ञान'' के परिणाम समझाइए।
11. कुल उपयोगिता व सीमांत उपयोगिता के बीच सम्बन्ध तालिका की सहायता से स्पष्ट कीजिए।
12. सम्बन्धित वस्तुओं की कीमतें कम होने से दी गई वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है समझाइए और उदाहरण दीजिए।

13. पूर्ति में वृद्धि से क्या अभिप्राय है फर्मों की संख्या में परिवर्तन का पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? समझाइए।

अथवा

पूर्ति वक्र को परिभाषित कीजिए। फर्म द्वारा प्रयोग किए जा रहे आगत की कीमत में कमी का वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? समझाइए।

14. कुल उत्पाद और सीमांत उत्पाद वक्रों की सहायता से परिवर्ती अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए।

केवल दृष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए प्र. सं. 14 के स्थान पर

कुल उत्पाद और सीमांत उत्पाद अनुसूची की सहायता से परिवर्ती अनुपातों के नियम की व्याख्या कीजिए।

15. अनधिमान वक्र विधि के अनुसार उपभोक्ता के संतुलन की शर्तें क्या हैं? यदि ये शर्तें पूरी नहीं होतीं तो संतुलन तक पहुंचने में क्या परिवर्तन होंगे।

अथवा

अनाधिमान वक्र की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

16. एक वस्तु का बाजार संतुलन में है वस्तु की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है। इस परिवर्तन के कारण पड़ने वाले प्रभावों की श्रृंखला समझाइए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

Section-B

17. वित्तीय निवेश से क्या अभिप्राय है।
18. मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद को परिभाषित कीजिए।
19. नगद आरक्षित अनुपात की परिभाषा दीजिए।
20. समय जमाओं से क्या अभिप्राय है?
21. व्यापार शेष से क्या अभिप्राय है?
22. भुगतान संतुलन खाते के स्वायत्त और समायोजित संव्यवहारों में भेद कीजिए।
23. किस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद का वितरण इसके आर्थिक कल्याण के माप की एक सीमा है? समझाइए।
24. निम्नलिखित तालिका को पूरा कीजिए।

आय	बचत	MPC	APC
0	-(80)	-	-
100	-	0.7	-
200	-	0.7	-
300	-	0.7	-

25. विदेशी मुद्रा की कीमत में वृद्धि होने पर उसकी मांग कम हो जाती है? कारण समझाइए।

अथवा

जब विदेशी मुद्रा की कीमत घटती है तो इसकी पूर्ति में भी कमी आती है? कारण समझाइए।

26. निवेश गुणक तथा सीमांत उपभोग प्रवृत्ति के सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए।
27. सरकारी बजट का ''आर्थिक स्थिरता'' उद्देश्य की व्याख्या कीजिए।

अथवा

सरकारी बजट का ''आय का पुनर्वितरण'' उद्देश्य समझाइए।

28. कारण सहित व्याख्या कीजिए कि राष्ट्रीय आय को आंकलन करते समय निम्न के साथ क्या व्यवहार किया जाता है।

(क) कार विक्रेता द्वारा खरीदी गई कार

(ख) कार के रखरखाव पर गृहस्थ द्वारा किया गया व्यय

29. सरकारी बजट से सम्बन्धित निम्न आंकड़ों की सहायता से (क) राजस्व घाटा, (ख) राजकोषीय घाटा, (ग) प्राथमिक घाटा ज्ञात कीजिए।

1.	योजनागत पूंजीगत व्यय	240
2.	राजस्व व्यय	200
3.	गैर योजनागत पूंजीगत व्यय	160
4.	राजस्व प्राप्तियां	140
5.	उधार छोड़कर पूंजीगत प्राप्तियां	280
6.	ब्याज भुगतान	60

30. अर्थ व्यवस्था में मांग आधिक्य को दूर करने में निम्नलिखित की भूमिका समझाइए।

(क) सरकारी व्यय

(ख) वैध आरक्षित अनुपात

31. संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से व्यापारिक बैंक द्वारा किए जाने वाले मुद्रा निर्माण की व्याख्या कीजिए।

32. निम्नलिखित आंकड़ों से राष्ट्रीय आय और व्यैक्तिक प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए।

1)	निवल आयात	(–) 20
2)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	1400
3)	निजी आय	1200
4)	व्यैक्तिक कर	300
5)	अवितरित लाभ	40
6)	निवल देशीय पूंजी निर्माण	240
7)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	400
8)	कर्मचारियों का निवल पारिश्रमिक	10
9)	निगमित कर	200
10)	आर्थिक सहायता पर उत्पाद कर का आधिक्य	210

SET-II

Section-A

1. बजट रेखा की परिभाषा दीजिए।

2. अर्थशास्त्र में निम्नस्तरीय वस्तु का क्या अर्थ होता है?

3. किस प्रकार के बाजार में एक फर्म उत्पाद की कीमत को प्रभावित नहीं कर सकती?

4. एकाधिकार की परिभाषा दीजिए।

5. अल्पाधिकारी बाजार को परिभाषित कीजिए।

6. एक वस्तु की मांग की कीमत लोच पर निम्न लिखित के प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

   क) प्रतिस्थापन वस्तुओं की संख्या

   ख) वस्तु की प्रकृति

7. वस्तु की मांग में 'वृद्धि' के किन्हीं दो कारणों की व्याख्या कीजिए?

   अथवा

   एक वस्तु की कीमत और मांग-मात्रा में विपरीत समबन्ध की व्याख्या कीजिए।

8. 2 इकाइयों का उत्पादन करने पर एक फर्म की औसत स्थिर लागत 30 रु. है उसकी औसत कुल लागत अनुसूची दी गई है उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर इसकी सीमांत लागत और औसत परिवर्ती लागत का परिकलन कीजिए।

उत्पादन (इकाइयां)	1	2	3
औसत कुल लागत (रु.)	80	48	40

9. वस्तु की 2 रु. प्रति इकाई कीमत पर कुल संप्राप्ति 400 रु. है जब कीमत बढ़कर 3 रु. प्रति इकाई हो जाती है तो पूर्ति मात्रा 300 इकाई हो जाती है पूर्ति की कीमत लोच का परिकलन कीजिए।

10. अल्पाधिकार बाजार में फर्मो की संख्या कम क्यों होती है समझाइए

11. ''कैसे उत्पादन करें'' की समस्या की व्याख्या कीजिए

    अथवा

    व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में भेद कीजिए। उदाहरण दीजिए।

12. जब एक वस्तु की कीमत 1 रु. प्रति इकाई घटती है तो इसकी मांग मात्रा 3 इकाई बढ़ जाती है। इसकी मांग की कीमत लोच (–2) है। कीमत में परिवर्तन से पूर्व 10 रु. प्रति इकाई कीमत पर इसकी मांग-मात्रा का परिकलन कीजिए।

13. एक सामान्य वस्तु की संतुलन कीमत में, उसके क्रेताअें की आय कम होने से, कैसे परिवर्तन आता है? प्रभावों की श्रृंखला समझाइए।

14. अपने उत्तर के लिए कारण देते हुए बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत:

    1) जब सीमांत संप्राप्ति स्थिर होती है और शून्य नहीं होती तो कुल संप्राप्ति भी स्थिर होगी।

    2) जैसे ही सीमांत लागत बढ़ने लगती है, औसत परिवर्ती लागत भी बढ़ने लगती है।

    3) चाहे कारक के ह्रासमान प्रतिफल हों या वर्धमान प्रतिफल हों, कुल उत्पाद हमेशा बढ़ता है।

15. अनधिमान वक्र विधि के अंतर्गत उपभोक्ता के संतुलन की शर्तें क्या हैं? यदि ये शर्तें पूरा नहीं होती तो संतुलन तक पहुंचने में क्या परिवर्तन होंगे?

16. नीचे दी गई अनुसूची से उत्पादन का वह स्तर ज्ञात कीजिए जिस पर उत्पादक संतुलन की स्थिति में है। सीमांत लागत और सीमांत आगम विधि का प्रयोग का प्रयोग करें। अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए।

कीमत प्रति इकाई (रु.)	उत्पाद (इकाई)	कुल लागत (रु.)
8	1	6
7	2	11
6	3	15
5	4	18
4	5	23

Section-B

17. मुद्रा का अर्थ बताइए।

18. राजस्व घाटे का क्या अर्थ होता है?

19. प्रत्याशित समस्त मांग क्या होती है?

20. स्फीतिक अंतराल का अर्थ बताइए।

21. विदेशी विनिमय की मांग के दो स्रोत बताइए।

22. वास्तविक और मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद में भेद कीजिए।

अथवा

कारण बताते हुए, निम्नलिखित को मध्यवर्ती और अंतिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए :

1) मशीनों के व्यापारी द्वारा खरीदी गई मशीनें

2) एक परिवार द्वारा खरीदी गई कार

23. केन्द्रीय बैंक के 'सरकार के बैंकर' के कार्य की व्याख्या कीजिए।

24. सरकारी बजट के आबंटन (नियतन) कार्य की व्याख्या कीजिए।

25. भुगतान संतुलन खाते के स्वायत्त और समायोजित संव्यवहारों में भेद कीजिए।

26. दो उदाहरण देते हुए समझाइए कि विदेशी मुद्रा की कीमत घटने पर उसकी मांग क्यों बढ़ती है।

27. व्यवसायिक बैंक मुद्रा का निर्माण कैसे करता है?

अथवा

केन्द्रीय बैंक की 'खुली बाजार कार्रवाई'' व्यवसायिक बैंकों द्वारा किए जाने वाले मुद्रा निर्माण को कैसे प्रभावित करती है? समझाइए।

28. कारण सहित लिखिए कि निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत

1) जब सीमांत उपभोग प्रवृत्ति शून्य होती है, तो निवेश गुणक का मूल्य भी शून्य होगा।

2) औसत बचत प्रवृत्ति का मूल्य कभी भी शून्य से कम नहीं हो सकता।

29. निम्नलिखित में भेद कीजिए।

1) पूंजीगत व्यय और राजस्व व्यय

2) राजकोषीय घाटा और प्राथमिक घाटा

30. भारत की राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय निम्नलिखित के साथ क्या व्यवहार किया जाएगा अपने उत्तर के लिए कारण दीजिए।

1) एक विदेशी को एक भारतीय कम्पनी के अंशों में किए गए निवेश से प्राप्त लाभांश

2) कनाडा में एक भारतीय बैंक की शाखा द्वारा अर्जित लाभ।

3) एक विदेशी कम्पनी द्वारा भारत में पढ़ रहे भारतीय विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति।

अथवा

राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने में आने वाली दोहरी गणना की समस्या एक उदाहरण देकर समझाइए। इस समस्या से बचने के दो वैकल्पिक उपाय भी बताइए।

31. एक अर्थव्यवस्था आय का संतुलन स्तर 12,000 करोड़ रुपये है। सीमांत उपभोग प्रवृत्ति का अनुपात है 3:1 है। 20,000 करोड़ रुपये आय के नए संतुलन स्तर पर पहुंचने के लिए आवश्यक अतिरिक्त निवेश का परिकलन कीजिए।

32. निम्नलिखित आंकड़ों से (अ) बाजार मूल्य पर घरेलू उत्पाद और (ब) विदेशों से कारक आय का परिकलन कीजिए।

1) लाभ	500
2) निर्यात	40
3) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	1500
4) कारक लागत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद	2800
5) शेष विश्व से निवल चालू अंतरण	90
6) किराया	300
7) ब्याज	400
8) विदेशों को कारक आय	120
9) निवल अप्रत्यक्ष कर	250
10) निवल घरेलू पूंजी निर्माण	650
11) सकल स्थायी पूंजी निर्माण	700
12) स्टॉक में परिवर्तन	50